मुधं तीज बहाल



पूजा प्रकाश

"आमुख"

श्री गुरुवे नमः

पिछले शतक में कश्मीर के एक प्रक्षात संस्कृत कवि पं० मोदर जी ने कश्मीर देश की तुलना भगवान इन्द्र के स्वर्गलोक इन शब्दों में की है :–

"देवा यत्र कृतास्पदा रूचिधरा विश्वेनिला कोमला :
साध्या हस्तगत: समं दसुगुर्णे विध्याधरा मानवा: ।
महाराजिक वंशजाशचा तुषिता आभास्वरा सज्जना:
सेयं शक्रपुरीमतीत्य न कथं कश्मीर भ् राजते ।।

"अर्थात यहां के कोमल जलवायु के कारण देवता गण बड़े ील हैं और अत्यन्त ही कम परिश्रम से उनकी प्रत्येक मनो-मना सिद्ध होती है । यहां की जन जाति विद्वान है । शासकों के तथा परिवार अत्यन्त सुखी हैं जिसके परिणाम स्वरूप यहां जनता अत्यन्त ही सुखी है । क्या यह कश्मीर भूमि इन्द्र के र्वगलोक से कहीं अच्छों नहीं है ।"

एक मुसलमान कवि ने भी कुछ ऐसी ही भावनाऐं प्रकट की थीं जब वह कश्मीर आया था :–

"आवाज़ दो" "जोश" सर कश्मीर आया है,
खुदा से इन्तिकाम आदम लेने आया है"

इसी प्रकार असंक्ष्य चिन्तक और कवि कश्मीर की प्रशंसा करते-करते थके नहीं है कारण यह है कि ब्रह्मा जी के पौत्र कश्यप जी ने इस सुन्दर भूमि की प्रतिष्ठा डाल दी है ।

आज से लाखों वर्ष पूर्व यह सारा देश जल का एक अपार समूह था जिसको नीलमत पुराण में सती सर का नाम दिया गया है। कश्यप जी के मन में एक ऐसा बिचार उत्पन्न हुआ कि वह तपस्या के योग्य एक पवित्र भूमि का निर्माण करें। इस विचार से उन्होंने भगवान "शिव" की घोर तपस्या की जिससे उन्हें भगवान "शिव जी महाराज" का साक्षात्कार दर्शन हो गया और कश्यप जी ने अपनी इच्छा महामुनेश्वर भगवान शिव जी महाराज के सामने प्रकट की। "तथास्तु" शब्द भगवान शिव के मुखारबिन्द से सुन कर, कश्यप जी अत्यन्त हर्षित हो गए। कुछ ही देर में सारा जल बहकर बाहर निकलने लगा और धीरे-धीरे पहिले पर्वत और फिर भूमि प्रकट हो गई। सब से पहिले स्वामी अमरनाथ जी का पर्वत प्रकट हुआ जहां पर भगवान शिव ने माता पार्वती को अमर कथा सुनाई।

प्रत्येक भूमि, स्थल या देश की शोभा तब ही बनती है जब वहां जीव जन्तु इत्यादि वास करते हों इस विचार से कश्यप जी ने सारे भारत वर्ष का भ्रमण करके उधर के ऋषियों, मुनियों इत्यादि को कश्यप मर (जो की फिर कश्मीर बन गया) की ओर प्रेरित करने के लिऐ गऐ। कुछ ऋषिवर तो आ गऐ परन्तु अधिकतर ऋषियों में थोड़ी सी हिचकिचाहट देखकर कश्यप जी ने देवियों और देवताओं को आमन्त्रित किया जो बड़ी प्रसन्नता से मान गऐ और हर एक देवता ने यहां पर अपना-अपना निवास स्थान बनाया जिससे सभी ऋषिगण कश्मीर की ओर आकर्षित

हो गऐ। यही कारण है कि "कलहन" ने अपनी राज-तरंगनी में कहा है :-

" तिलांशोपिन यत्रास्ति (यत्र अस्ति) पथव्यास्त्तीर्थ बहिष्कृत":

अर्थात यहां कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां पर कि कोई तीर्थ न हो। इसी कारण भारत के विभिन प्रान्तों से ऋषिवर मुनिवर इत्यादि पलायन करके कश्मीर में वास करने के लिऐ आऐ और इस प्रकार कश्मीर की सुन्दर नगरी प्रत्यक्ष रूप पा गई।

जल स्तर अभी थोड़ा ऊंचा होने के कारण सारी जनता अधिकतर पर्वतों के दामन पर और ऊंचे स्थानों पर बसने लगी। ऐसे ही कुछ ऋषिवर इत्यादि आजकल के हारी पर्वत के समीप रहने लगे और अपने ढंग से अपनी - अपनी तपस्या में लीन हो गऐ।

कुछ समय पश्चात कुछ भक्तजनों का ध्यान उस पर्वत के शिखर की ओर आर्कषित हो गया जहां एक मैना जिसको कश्मीरी भाषा में "हअर" कहते हैं, नित्य ही उस शिखर पर बड़ी देर तक बैठती थी। इसका कारण जानने के लिऐ कुछ भक्त-जन उस शिखर पर जा पहुंचे। उनकी प्रसन्नता की सारी सीमाऐं टूट गईं जब उन्हें उस शिखर पर "मुखर वाणी" "सरस्वती" का भास हुआ। अब भक्तजन उस शिखर पर

नित्य जाने लगे और पर्वत को हारी का पर्वत का नाम दिया गया अर्थात वह पर्वत जिसका भास एक "हारी" अर्थात मैना ने कराया। अब भक्तजन अधिक संख्या में उधर जाने लगे।

एक दिन भ्रमण करते - करते कुछ भक्तजन इसी शिखर के पूर्व में आ पहुंचे जहां उन्होंने माता चक्रेश्वरी का एक महान स्वयम्भू यन्त्र देखा जिससे वे अत्यन्त हर्षित हो गऐ। अब भक्त जन इस महान यन्त्र की आपार शक्ति का अनुभव करने के लिऐ अधिक संख्या में आऐ और इस स्थान को "प्रध्युमन पीठ" का नाम देकर इस प्रकार कहा :-

प्रध्युन्म शिखरा सीना मात्र चक्रोप शोभिताम पीठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम"

डा० टी-एन-गुंजू (प्रोफैसर, हिन्दी विभाग कश्मीर विश्वविध्यालय की टीका के अनुसार "धुम्न" का अर्थ है अपार शक्ति "चेतना," "सता" अथवा "बहुमूल्य सम्पति" और "प्र" शब्द का प्रयोग करने से वह शब्द उत्कृष्ट हो जाता है। इस प्रकार "प्रध्युमन पीठ" का अर्थ वह पीठ बन जाता है जहां पर ब्रह्मण्ड व्यापी चेतना स्थित है। इसी कारण इस पर्वत का नाम "श्री पर्वत" रखा गया।

अनुभव के आधार पर यह कहना उचित होगा कि प्रत्येक पुरुष स्त्री, बालक, बालिकाऐं एवं बड़ी संख्या में यवन भी इस पर्वत की परिक्रमा करते हैं जिससे उनकी अपनी संसारिक

मासिक एवं पारमर्थिक मनोकामनाऐं सिद्ध होती हैं। इस कारण भक्तजन आज तक इस स्थान की प्रशंसा करते थकते नहीं और किसी भक्तजन ने कहा है।–

"शान्ति नयस्याषु जनस्य पापं
रिक्त त्वमर्थेन निराकरोषि,।
कायं निषिञ्चस्यपि भाग्य पूरै
प्रगयसेऽत: खलु शारिकात्वं ।।
अर्थात :-
"शा" शब्द से जो पापों का क्षय करती है
"रि" शब्द के द्वारा जो हर प्रकार की ऋद्धि सिद्धी प्रदान करती है,
"का" शब्द से जो शरीर अथवा मन, बुद्धि तथा आचार विचार को कर्मनुसार सींचती है,
तभी उसको शारिका के नाम से पुकारते हैं ।।

वास्तव में शारिका का पीठ उस पर्वत पर है जिसको हम अभी भी "हारी" के नाम से पुकारते हैं और प्रध्युमन पीठ का स्थान श्री चक्रेश्वरी का स्थान है जो ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय-चेतना शक्ति का स्रोत है। कश्मीरी भाषा में "श" ध्वनि में प्राय: बदलती है। इस भाषा वैज्ञानिक नियम के आधार पर संस्कृत "हारी" या "हारिका" का स्थान "शारी" या "शारिका" हुआ है।

रीति के आधार पर कश्मीरी पण्डित "श्री महागणेश" "शिव और शक्ति माता" के उपासक हैं;जिस कारण यह पुस्तिका

विभिन्न पूजा विधियों पर आधारित हैं और इस संकलन में कुछ ऐसे भी स्तोत्र हैं जिनके समय के साथ लुप्त होने की सम्भावना है, केवल इस लिए कि हमारी युवा पीढ़ी को ऐसी पुस्तकें पढ़ने को मिलें इस समय की परिस्थितियों को देखकर ऐसे पूजा संकलन का प्रकाशन करना अति आवश्यक हो गया है ताकि हमारी युवा पीढ़ी अपने शीश को उपर उठाकर कहें कि बदलती परिस्थितियों में भी हम ने **"भट्टः तीज बहाल"** रखा।

अनेक भक्तजनों ने हमें इस संकलन का निमान करने में सहानभूति दी जिसके लिऐ हम उनका आभार प्रकट करते हैं अन्ततः हम भक्त जनों से यही प्रार्थना करते हैं कि यदि इस संकलन के बनाने में कोई त्रुटि रह गई हो तो कृपया प्रकाशक का ध्यान उस ओर दिलाएं जिसकी हम अगले संसकरण में शुद्धि कर सके ।।

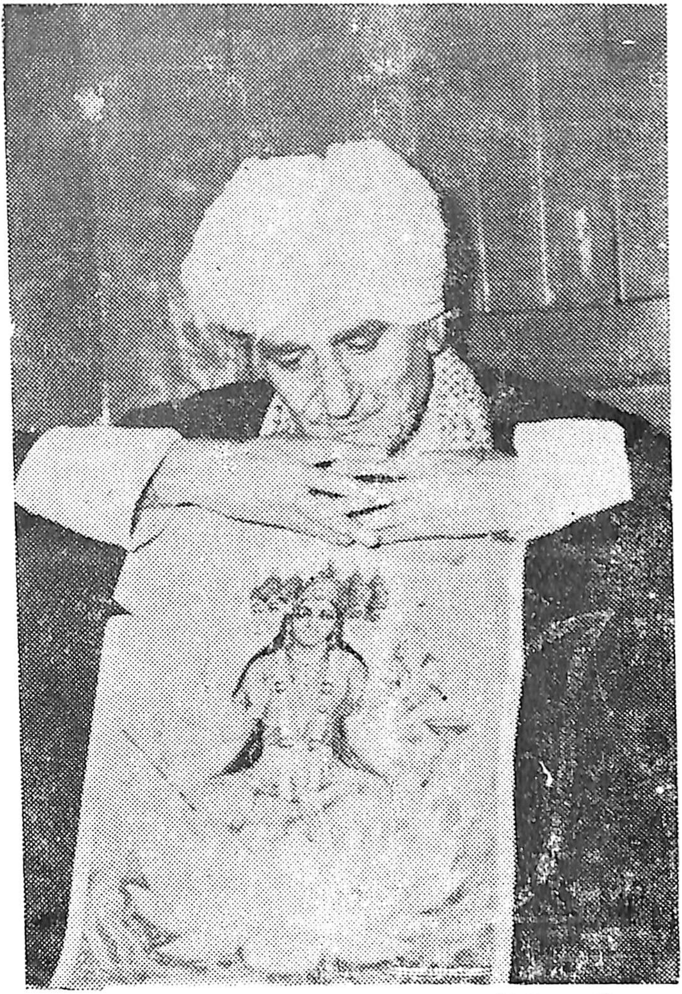
शुभमस्तु

सप्तर्षि संवत – 5072
चैत्र शुक्ल पक्ष—प्रतिपध्या
मार्च —20, 1996 ई०

जवाहर लाल हाक
29, तोप शेरखानियां
जम्मू (तवी) पिन-181121

ॐ गुरुवे नमः

विषय सूची



स्वामी सद्ध बब महाराज के चरण कमलों में समर्पित

सद्ध मअलिस छि सद्धि दाता वनान
युस छु जगतस अनुग्रह करान
भगवत स्वरुप कयाह छ सुय शुभान
दुखः त संकटः मन्ज छुय मुकलावान

ॐ श्री गणेशाये नमः

शुकलाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसंन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये
उभिप्रीत्यार्थं सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ।१।

गुरुःब्रंह्मा गुरुःविष्णो गुरुः साक्षात महेश्वरः
गुरुःएव जगत् सर्वम् तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।२।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।३।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्ति पूजामूलं गुरोपद
शास्त्रमूलं गुर्रोवाक्यं मोक्षमूलं गुरोःकृपा ।४।

नमामि सत्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणं
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थं सिद्धये ।५।

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धराय च
नमः ईश्वर पुत्राय श्रीगणेशाय नमो नमः ।६।

बिभ्रद्दक्षिणहस्तपद्मयुगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे
वामे मोदकपूर्णपात्रपरुषो नागोपवीती त्रिघ्क ।७।

श्रीमानसिंहयुगासनः श्रुतियुगे शङ्खौ वहन्मौलिमान
दिश्यातईश्वरपुत्र एव भगवांल्लम्बोदरः शर्मनः ।८।

गणानामधिपश्चणडो गजवक्त्रस्त्रिलोचन:
प्रसन्नो भवतान्नित्यं वरदाता विनायक: ।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णक:
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायक: ।९।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजानन:
द्वादशैतानि नमानि गणेशस्य समाहित:
य: पठेत्तु शिवोक्तानी स लभेत्सिद्धिमुत्तमाम् ।१०।

प्रथम वक्रतुणडं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्
तृतीयं कृष्णपिङ्गं तु चतुर्थं तु कपर्दिनम् ।
लम्बोदरं पञ्चमं तु षष्टं विकटमेव च
सप्तमंविघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णंतथाष्टमम् ।११।

नवमंभालचन्द्रं तु दशमं तु विनायकम्
एकादशं गणपतिं द्वादशं मन्त्रनायकम् ।
य: पठेत्तु च्छृणुयाद्वापि तस्यसिद्धिर्न दूरत: ।।
विध्यारम्भेविवाहे च प्रवेशेनिर्गने तथा
सडग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।१२।

योऽभ्यर्चित: सुरगणैर्बरसिद्धहेतो-
श्छेत्तुं भयानि च करे परशुं दधान: ।
देव: स शम्भुदयितापरिवर्धितश्रो-
र्विघ्नान्निवारयतु वारणराजवक्र: ।१३।

सिन्दूरकुङ्कुमहुताशनविद्रुमार्क
रक्ताब्जदाडिमनिभायचतुर्भुजाय ।

हरम्भंभैरवगणेश्वरनायकाय
सर्वार्थसिद्धि फलदाय गणेश्वराय ।१४।

ॐ चिदचित्पदगम्भीरं गमागमपदोज्झितम् ।
गहनाकाशसंकाशं वन्दे देवं गणेश्वरम् ।१५।

॥ श्रीसनत्कुमारुवाच ॥

शङ्कराद्ब्रह्मणा प्राप्तं पद्मयोनेर्मयाप्रभोः ।
तदहेर्कीतयिष्यामि स्तोत्रं परमदुर्लभम् ।१६।

षष्ठयां चतुर्थ्यामिष्टम्यां चतुर्दश्यां च भक्तितः ।
पूजयेच्च गणाध्यक्षं श्रद्धाभक्तिस मन्वितः ।१७।

अर्घैः पुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैर्माल्यैश्च चामरैः ।
वस्त्रैः कुण्डलकेयूरैर्मौलिभिश्च वितानकै ।१८।

भक्ष्यैर्भोज्यैरपूपैश्च मत्स्यैर्मांसैश्च मोदकैः ।
पानकैःफलमूलैश्च होमैर्मन्त्रादिभिस्तथा ।१९।

गङ्गाहृदे तु गाङ्गेयं श्रीशैले तु गणेश्वरम् ।
वाराणस्यां गजमुखं गयायां टङ्कधारिणम् ।२०।

प्रयागे तु गणाध्यक्षं केदारे विकटाननम् ।
लम्बोदरं कुरुक्षेत्रे नैमिषे च मदोत्कटम् ।२१।

जम्बकं दण्डकारण्ये लोकेशं हिमवदिगरौ ।
विश्वक्सेनं च विन्ध्याद्रौ मलये हेमकुम्भकम् ।२२।

नायकं पुष्करद्वीपे विघ्नेशं शल्मलौ स्थितम् ।
इलावृते विश्वरूपं हरिवर्षे घटोदरम् ।२३।

त्रिनेत्रं सिंहलद्वीपे श्वेतद्वीपे तु वामनम् ।
उज्जयिन्यां तु लम्वोष्ठं मालवे शूर्पकर्णकम् ।२४।

सौराष्ट्रे वरदं नित्यं काश्मीरे भीमरूपिणम् ।
सिन्धुसागरर्योमध्ये विज्ञेयं मन्त्रनायकम ।२५।

हर्यक्षं यक्षभवने कैलासे परमेश्वरम् ।
महोदरं तु लुम्पायां चम्पायां शिखिवाहनम् ।२६।

पाशहस्तं त्रिकूटेषु पूजयेत्सर्वसिद्धिदम् ।
बलमगिन्गुहायां तु पाटले सिंहवाहनम् ।२७।

पौणड्रे रौद्रमुखं चापि कलापिग्रामके जयम् ।
मेरुपृष्ठे कामरूपं नन्दनं नन्दने वने ।२८।

विजयं वै गन्धवने देवदारुवने गणम ।
आर्तांना विघ्नहरणं गङ्गासागरसङ्गमे ।२९।

महापथे विरूपाक्षं चित्रसेनं तु पुष्करे ।
दुर्जयं यमुनातीरे स्तम्भनं गन्धमादने ।३०।

अम्बरीषं भद्रवटे मोहनं हस्तिनःपुरे ।
किष्किन्धायामुग्रकेतुं लङ्कायां तु विभीषंणम् ।३१।

कलिङ्गे वरुणं चैव विन्ध्यपादे मदोत्कटम् ।
अश्वत्थं च तुरुष्केषु चीनेषु त्रिशिखायुधम् ।३२।

वज्रहस्तं कोसलेषु दाक्षिणात्त्येषु लोहितम् ।
शूलोद्धतकरं चैव मध्यदेशे प्रकीर्तितम् ।३३।

एकदंष्ट्रं पश्चिमाद्रौ पूर्वदेशेऽपराजितम ।
उत्तरेचारुवक्त्रं च वरिष्ठं त्रिपुरेषु च ।३४।

हिरण्यकवचं चैव गिरिसन्धिषु संस्थितम् ।
सुमुखं नागरन्ध्रेषु नर्मदायां च षड्भुजम् ।३५।

मायापुर्यांमहामायं भद्रकर्णेह्रदे शिवम् ।
गोकर्णे गजकर्णं च कान्यकुब्जे वराननम् ।३६।

पद्मासनं कामरूपे श्रीमुखं सर्वतः स्थितम् ।
वेदवेदाङ्गशास्त्रेषु चिन्तयेद्गणनायकम् ।३७।

अष्टाषष्टिस्तु नामानि स्तुतान्यद्भुतकर्मणः
नित्यं प्रभातकाले तु चिन्तयेत्सर्वसिद्धदम् ।३८।

एतत्स्तोत्रं पवित्रं तु मङ्गलं पापनाशनम् ।
शस्त्रखर्वोदवेतालयक्षरक्षोभयापहम् ।३९।

चौरारण्यभयव्याघ्रव्याधिदुर्भिक्षनाशनम् ।
कृत्यादिमायाशमनं सर्वशत्रुविमर्दनम् ।४०।

त्रिसन्ध्यं यः पठेदेतत्स भवेत्सर्वसिद्धिभाक् ।
गणेश्वरप्रसादेन लभते शाङ्करं पदम् ।४१।

ॐ हेमजा सुतं भजं गणेशं ईश नन्दनम्
एक दन्त वक्र तुण्ड नागयज्ञोसूत्रकम् ।

रक्त गात्र धूम्रनेत्र शुक्ल वस्त्रपडितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४२।

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधि रोहिणीम्
अग्निकोटि सूर्येज्योति वज्रकोटि पर्वतम्,
चित्रमाल भक्तिजाल बालचन्द्र शोभितम्
कल्पवृक्ष भरक्तक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४३।

विश्ववीर्यं विश्वदीर्घ विश्वकर्म निर्मलम्
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम्
चतुर्मखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४४।

भूतभव्य हव्य कव्य भव भार्गन वन्दितम्
देववह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ।
पूर्णब्रह्म सूर्यवर्ण पुरुषं पुरान्तकम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४५।

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नव निधानदायकम्
यज्ञकर्म सर्व धर्म वर्ण वर्णरुचितम्
भूतधूम्र दुष्ट मुष्ट दायकं विनायकम्
कल्प वृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४६।

नमोस्तुति गणेश्वरम् नमोस्तुति लम्बोदरं,
कल्प वृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ।४७।

अथ गणेशलीलास्तुतिः ॥

अद्रिराजज्येष्ठपुत्र हे गणेश विघ्नहन् पद्मयुग्मदन्तलड्डु-
पात्रमाल्यहस्तक ।
सिंहयुग्मवाहनस्थ भालनेत्रशोभित कल्पवृक्षदानदक्ष
भक्तरक्ष रक्ष माम् ।१।

एकदन्त वक्रतुण्ड नागयज्ञसूत्रक सोमसूर्यवन्हमेयमान-
मातृनेत्रक ।
रत्नजालचित्रमालभालचन्द्रशोभित कल्पवृक्ष दानदक्ष ।२।

वह्निसूर्यसोमकोटिलक्षतेजसाधिकद्योतमानविश्व-
हेतिवेचिवर्गभासक।
विश्वकर्तृ विश्वभर्तृ विश्वहर्तृ वन्दित कल्पवृक्ष० ।३।

स्वप्रभावभूतभव्यभाविभावभासक कालजालबद्धवृद्धबाल-
लोकपालक ।
ऋद्धिसिद्धबुद्धिवृद्धिभुक्तिमुक्तिदायक कल्पवृक्ष० ।४।

मूपकस्थ विघ्नभक्ष्य रक्तवर्णमाल्यधृन्मोदकादिमोदिता-
स्यदेववृन्दवन्दित ।
स्वर्णदीसुपुत्र रौद्ररूप दैत्यमर्दन कल्पवृक्ष० ।५।

ब्रह्मशम्भुविष्णुजिष्णुसूर्यसोमचारणदेवदैत्यनागयक्षलो-
कपालसंस्तुत ।
ध्यानदानकर्मधर्मयुक्त शर्मदायक कल्पवृक्ष० ।६।

आदिशक्तिपुत्र विघ्नराज भक्तशङ्कर दीनानाथ दीनलोक-
दैन्यदुखनाशक ।
अष्टसिद्धिदानदक्ष भक्तवृद्धिदायके कल्पवृक्ष० ।७।

शैवशक्तिसांख्ययोगशुद्धवादिकीर्तित बौद्धजैनसौरकार्म-
रात्रर्तकित ।
वल्लभादिशक्तियुक्त देव भक्तवत्सल कल्पवृक्ष० ।८।

देवदेव विघ्ननाश देवदेवसंस्तुत देवशत्रुदैत्यनाश
जिष्णुविघ्नकीर्तित ।
भक्तवर्गपापनाश युद्धबुद्धिचिन्तित कल्पवृक्ष० ।९।

हे गणेश लोकपालपूजिताङ्घ्रियुग्मक धन्यलोकदैन्यनाश
पाशराशिभेदक ।
रम्यरक्त धर्मसक्तभक्तचित्तपापहन्कल्पवृक्ष० ।१०।

य पठन्ति विघ्नराजभक्तिरक्तचेतसः स्तोत्रराजमेनसोप-
मुक्तशुद्ध-चेतसः ।
ईप्सितार्थमृद्धिसिद्धिमंत्रसिद्धभापिताः प्रान्नुवन्ति स्वते
गणेशपादपद्मभाविताः ।११।

इति श्री गणेशलीलास्तुति

। श्री राज राजेश्वरी अस्तुति ।

ॐ छन्दःपादयुगा निरुक्तसुमुखा शिक्षा च जंघायुगा
ऋग्वेदोरुयुगा यजुःसुजघना या सामवेदोदरा ।
तर्कन्यायकुचा श्रुतिस्मृतियुक् काव्यादिवेदानना,
वेदान्तामृतलोचना भगवती श्रीराजराजेश्वरी ।।१।।

ईशधीश्वरयोगिवृन्दविधृता स्वानन्दभूता परा
पश्यन्तीत्यनु मध्यमा विलसती श्रीवैखरीरूपिणी ।
आत्मानात्मविचारिणी त्रिनयना विद्यावतीभारती,
श्रीचक्रप्रियबिंदुतर्पणपरा श्रीराजराजेश्वरी ।।२।।

कल्याणायुतपूर्णबिम्बवदना पूर्णेश्वरी नंदिनी
पूर्णा पूर्णतरा परेशमहिषी पूर्णामृतास्वादिनी ।
सम्पूर्णा परमोत्तमामृतकला विद्यावती भारती
श्रीचक्र० ।।३।।

एकाकारमनेकवर्णविविधाकारैकचित् रूपिणी
चैतन्यात्मकएकचक्ररचिता चक्रांगएकाकिनी ।
भावाभावविभाविनी भयहरा सद्भक्तिचिंतामणिः
श्रीचक्र० ।।४।।

लक्ष्यालक्ष्यनिरीक्षणा निरूपमा रुद्राक्षमालाधरा
साक्षात्कारणदक्षवंश कलिता दीर्घातिदीर्घेश्वरी ।
भद्राभद्रवरप्रदा भगवती भद्रेश्वरीभद्रदा
श्रीचक्र० ।।५।।

ह्रीं बीजानलनादबिंदुभरिता सत्कार (ओंकार
तादात्मिका,
ब्रह्मानंद घनोदरी गुणवती ज्ञानेश्वरी ज्ञानदा।
इच्छाज्ञानक्रियावती जितवती गन्धर्वसंसेविता,
श्रीचक्र० ॥६॥

हर्षोन्मत्तसुवर्णपात्रभरिता पार्श्वोन्नता घूर्णिता
हुंकार प्रियशब्दब्रह्म (राशि) निरता स्वारस्वतोल्लासि
सारासारविचारचारुचरिता वर्णाश्रमाकारिणी,
श्रीचक्र० ॥७॥

सर्वज्ञानकलावती सकरुणा सन्नादिनी नन्दिनी,
सर्वान्तर्गतशालिनी शिवतनूसन्दीपिणी दीपिनी।
संयोगप्रियरूपिणी प्रियवती प्रीता प्रतापोन्नता।
श्रीचक्र० ॥८॥

कर्माकर्मविवर्जिता कुलवती कर्मप्रदा कौलिनी,
कारुण्यावधि सर्वकर्मनिरता सिंधुप्रिया शालिनी।
पूर्णब्रह्मसनातनान्तरगता ज्ञेया स्वयोगात्मिका,
श्रीचक्र० ॥९॥

हस्तिकुम्भसदृक्पयोधरवरा पीनोन्नता नम्रगा,
हाराद्याभरणा सुरेन्द्र विनुता श्रृङ्गाटपीठालया।
योन्याकारकयोनिमुद्रितकरा नित्यं सुवर्णात्मिका,
श्रीचक्र० ॥१०॥

लक्ष्मीलक्षणपूर्णकुम्भवरदालीला विनोदस्थिता,
लाक्षारञ्जित पद्मपाद युगला ब्रह्माण्डसंसेविता।

लोकालोकितलोक कामजयिनी लोकाश्रयाङ्काश्रया,
श्रीचक्र० ॥११॥

ह्लींकाराङ्कितशंकरप्रियतनुः श्री योगपीठेश्वरी,
माङ्गल्यायुतपङ्कजाभनयना माङ्गल्यसिद्धिप्रदा ।
तारुण्यात्तपसार्चिता तरुणिका तंत्रोपमातन्विता,
श्रीचक्र० १२॥

सर्वेशाङ्गविहारिणी सकरुणा सर्वेश्वरी सर्वगा,
सत्या सर्वमयी सहस्रदलगा सप्तार्णवोपस्थिता ।
सङ्गासङ्गविवर्जिता सुखकरी बालार्ककोटिप्रभा,
श्रीचक्र० ॥१३॥

लक्ष्मीशादिविरिञ्चिचक्रमुकुटाद्यष्टाङ्गपीठार्चिता,
सूर्येन्द्वग्निमयैकपीठनिलया चिन्मात्रकौशेश्वरी ।
गोप्त्री गुर्विणिगर्विता गगनगा गङ्गा गणेशप्रिया,
श्रीचक्र० ॥१४॥

कादिक्षान्तसुवर्णबिन्दुसुतनुः स्वर्णादिसिंहासना
नानारत्नविचित्रचित्ररचिता चातुर्यचिन्तामणिः ।
चित्तानन्दविधायिनी सुविपुला कोटित्रयीश्यम्बिका
श्रीचक्र ॥१५॥

ह्लींकारत्रयरूपिणी समयिनी संसारिणी हंसिनी,
वामाचारपरायणा सुमुकुटा बीजावती मुद्रिणी ।
कामाक्षी करुणाविचित्ररचिता श्री श्री त्रिमूर्त्यात्मिका,
श्रीचक्र० ॥१६॥

सा बिम्बप्रतिबिम्बलम्बित लसत बिम्बाधरा याम्बिका
जम्बीरोत्पलकर्णशोभितमुखा जम्बूफल श्रीकुचा ।
नानारत्नकिरीटदीप्तिलसिता प्रत्यक्षदीक्षात्मिका,
श्रीचक्र० ॥१७॥

यत्तेजो निधिभिस्त्वन्नत घृणिभिर्नोपाह्यते प्रेरितुम् ।
हार्दं ध्वान्तमपास्य सिक्षणर्मपि तद्धयान मात्रा दृशा ।
यत्सद्भावादनुभाति सर्वमुदितं भानुं यथा पद्मिनी ।
प्रत्यग्दाम नमामि तत्तव वपुः श्रीराज राजेश्वरी,
श्रीचक्र० ॥१८॥

आसीना सरसीरूहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैबियृती
दांन पद्मयुगा थयौ च वपुषा सौदामिनी सन्निया ।
मुक्ताहार विराज मान विपलस्तुक्षस्तमोद्धासिनो
पायन्नः कमला कटाक्ष भवैरानन्द यन्तीम हरिम ।१६।

इति श्री राज राजेश्वरी अस्तुति

अथ शारिकास्तुतिः

ॐ बीजैः सप्तभिरूज्जवलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्हित ।
काश्मीरप्रवरेशमध्यनगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता
देवीसप्तकसंयुता भगवती श्री शारिका पातुनः ॥

जय भगवति विन्धयवासिनि कैलासवासिनि श्मशा-
नवासिनि हुङ्करिणि कालायनि कात्यायनि हिमगिरितनये

कुमारमातः गोविन्दभगिनि शितिकण्ठकण्ठाभरणे अष्टादशभुजे भुजङ्गवलमण्डिते केयूरहाराभरणेऽजेय खङ्गत्रिशूलडमरूमुदगस्वषककशरचापवराऽभयपाशपुस्तक कपालखटवाङ्ग गदामुसुलत्तोमरचक्रहस्ते कृपापरे प्रभूतविविधायुधे चण्डिके चण्डघण्टे किरातवेशे ब्रह्माणि रुद्राणि नारायणि ब्रह्मचारिणि दिव्यतपोविधायिनि वेदमातः गायत्रि सावित्रि सरस्वति सर्वाधारे सर्वेश्वरि विश्वेश्वरि विश्वकर्त्रि समाधिविश्रान्तिमये चिन्मये चिन्तामणिस्वरूपि कैवल्ये शिवे निराश्रये निरूपाधिमये निरामयपदे ब्रह्मविष्णुमहेंश्वरनमिते मोहिनि तोषिणि भयंकरनाशिनि दितिसुतप्रमथिनि काले कालकिंकरमथिनि कालाग्निशिखे कालरात्रि अजे नित्ये सिंहस्ये योगरते योगेश्वरनमिते भक्तजनवत्सले सुरप्रियकारिणि दुर्गे दुर्जये हिरण्ये शरण्ये कुरू मां दयाम् ॥

प्रद्युम्नशिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम् ।
पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाभ्यहम् ॥
अमा माऽवतु कामा च चार्वङ्गी टङ्कधारिणी ।
तारा च पार्वती चैव यक्षिणी शारिकाष्टमी ॥

॥ इति श्रीशारिकास्तोत्रम् ॥

अथ श्री भवानीनामसहस्रस्तोत्रम

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवाधिदेवेश्वरी
दीनानाथकृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती ।
ओंकाराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्वदा
भूयान्नो वरदा सदा ह्यभयदा कामेश्वरी कामदा ।१।

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्तवद्गुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिश्चतेसि ।
त्वत्पदार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि ! मा शाम्यतु ।२।

वराङ्कुशौ पाशमभीतिमुद्रां
करैर्वहन्तीं कमलासनस्थाम् ।
बालार्ककोटिप्रतिमां त्रिनेत्रां
भजेहमाध्यां भुवनेश्वरीं ताम् ।३।

अरिशङ्खकृपाणखेटवाणान्
सुधनुःशूलकत्रर्जनीं दधाना ।
भवतां महिषोत्तमाङ्गसंस्था
नवदूर्वासदृशो श्रियेऽस्तु दुर्गा ।४।

शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरां नमामि ।५।

अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फरन्ती
मधुरमधुबपिन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती ।
दुरितमपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती
जयति जगति देवी सुन्दरी क्रीडयन्ती ।६।

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम्
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम् ।
प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम्
भवानीं कालसंहारबद्धमुद्राविभूपिताम् ।७।

जगतिस्थतिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः ।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ।८।

ओं नमो भवान्यै

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ।९।

सुरासुरशिरोरत्नरञ्जिताङ्घ्रियुगं प्रभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत ।१०।

॥ श्री नन्दिकेश्वर उवाच ॥

देवदेव जगन्नाथ संशयोस्ति महान्मम ।
रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं स्वां भक्तिवत्सलम् ।११।

देवतायास्त्वया कस्याः स्त्रोत्रमेतद्दिवानिशम् ।
पठयतेऽविरतं नाथ ! त्वत्तःकिमपरः परः ।१२।

इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः ।
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः ।१३।

श्रीभगवानुवाच

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत् ।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् ।१४।

पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतसः ।
गुणत्रयमयो शक्तिर्मूलप्रकृतिसंज्ञिता ।१५।

तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्वैस्तैर्महदादिभिः ।
चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्य तस्थुषी ।१३।

हेतुः सङ्कल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा ।
इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम् ।१७।

ततो वागितिविख्याता शक्तिःशब्दभयी परा ।
प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ।१७।

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा ।
सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनि ।१६।

तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते ।
तयैतत्पाल्यते सर्वं यस्यामेव प्रलीयते ।२०।

अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता ।
अराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।२१।

आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।२१।

तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम् ।
सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्यप्राणिपुजितैः ।२२।

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा ।
तदारम्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम् ।२३।

तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम् ।
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम् ।२४।

सपन्नगं समुद्रं सशैलवनकाननम् ।
सराशिग्रहनक्षत्रं पञ्चभूतगुणान्वितम् ।२५।

नन्दिन्नामसहस्त्रेण स्तवेनानेन सर्वदा ।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ।२६।

इत्युक्त्वोपरतं देवं चराचरगुरं विभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रावाच परमेश्वरम् ।२७।

॥ श्रीनन्दिकेश्वरुवाच ॥

भगवन्देवदेवेशं लोकनाथ जगत्पते ।
भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादःक्रियतां मयि ।२८।

देव्याः स्तवमिमं पुणयं दुर्लभं यत्सुरैरपि ।
श्रोतुमिच्छाभ्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु ।२९।

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

श्रृणु नन्दिन्महाभाग स्तवराजमिमं शुभम् ।
सहस्त्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सखुमोक्षदम् ।६०।

शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैनातः परतरः स्तवः ।३१।

अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवराजस्य, महादेवऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, आद्याशक्तिः, भगवती भवानी देवता,

ह्रीं वीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवारणार्थं श्रीदेवीप्रीत्यर्थं अमुककामनासिद्धयर्थें पाठेविनियोगः ॥

॥ अथ करन्यासः ॥

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः, ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः, ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यांनमः, ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ करालिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥

ॐएकवीरायै हृदयायनमः, ॐमहामायायै शिरसेस्वाहा। ॐपार्वत्यै शिखायै वषट्, ॐगिरिशप्रियायै कवचायहुम् ॐगौर्यै नेत्रत्राय वौषट्, ॐकरालिन्यै अस्त्रायफट् ॥

॥ अथ प्राणायामः ॥

बालार्कमण्डलाभासं चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ।३२।

अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्याम-
म्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम् ।
रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ।३३।

माता भवानी च पिता भवानी
वन्धुर्भवानी च गुरुर्भवानी ।
विद्या भवानी द्रविणं भवानी
यतो यतो यामि ततो भवानी ।३४।

श्रीशङ्खचक्रमुसलाम्बुजयुग्महस्तां
नागेन्द्रहारवलयङ्कृतकणठमालाम् ।
सिन्दूरकुङ्कुमसहस्रमरीचिदीप्तां
श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि ।३५।

।। श्री ईश्वर उवाच

ॐ महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मीः शिवप्रिया ।
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्धसरस्वती ।।१।।

क्षमा कान्तिः प्रभा ज्योत्स्ना पार्वती सर्वमङ्गला ।
हिङ्गुला चण्डिका दान्ता पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया ।।२।।

त्रिपुरा नन्दिनी नन्दा सुनन्दा सुरवन्दिता ।
यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधा धृति ॥३॥

प्रीतिर्प्रथा प्रसिद्धा च मृडानी विन्ध्यवासिनी ।
सिद्धविद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता ॥४॥

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना ।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥५॥

ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योति कुमुदहासिनी ।
दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गति पुरवासिनी ॥६॥

अपर्णा शाम्बरीमाया मदिरा मृदुहासिनी ।
कुलवागीश्वरी नित्या नित्यक्लिन्ना कृशोदरी ॥७॥

कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वह्निवासिनी ।
लम्वोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा ॥८॥

नरेश्वरी च सत्या च सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।
संकर्षणी नारसिंही वैष्णवी च महोदरी ॥६॥

कात्यायनी च चम्पा च सर्वसम्पत्तिकारिणी ।
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती ॥१०॥

प्रज्ञापारमिता प्रज्ञा तारा मधुमती मधुः ।
क्षीरार्णवसुधाहारा कालिका सिंहवाहिनी ॥११॥

ओंकारा वसुधाकारा चेतना कोपनाकृतः ।
अर्धबिन्दुधरा धारा विश्वमाता कलावती ॥१२॥

पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती ।
कुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी ॥१३॥

जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसबाहना ।
राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा सुधाकारा सुधात्मिका ॥१४॥

राजनीतिस्त्रयी वार्ता दण्डनीतिः क्रियावती ।
सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा ॥१५॥

सिन्धुर्मन्दाकिनी गंगा यमुना च सरस्वती ।
गोदावरी विपाशा च कावेरी च शतद्रका ॥१६॥

सरयूश्चन्द्रभागा च कौशिकी गण्डकी शुचि ।
नर्मदा कर्मनाशा च चर्मण्वत्यथदेविका ॥१७॥

वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाहना ।
सती पतिव्रता साध्वी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥१८॥

एकचक्षुः सहस्राक्षो सुश्रोणिर्भगमालिनी ।
सेना श्रेणिः पताका च सुव्यूहा युद्धकांक्षिणी ॥१९॥

पताकिनी दयारम्भा विपश्वीपश्वमप्रिया ।
परापरकलाकान्ता त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ॥२०॥

ऐन्द्रीमाहेश्वरी ब्राह्मी कौमारी कुलवासिनी ।
इच्छा भगवती शक्तिः कामधेनुः कृपावती ॥२१॥

वज्रायुधा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा ।
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थितिसंहारकारिणी ॥२२॥

एकानेका महेज्या च शतबाहुर्महाभुजा ।
भुजङ्गभूषणा भूषा षट्चक्रक्रमवासिनी ॥२३॥

षट्चक्रभेदिनी श्यामा कायस्था कायवर्जिता ।
सुस्मिता सुमुखी क्षामा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२४॥

अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिनी ।
रक्ता नीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कर्बु‍रा ॥२५॥

क्षुधा तृष्णा जरावृद्धा तरुणी करुणालया ।
कला काष्टा मुहूर्ता च निमेषा कालरूपिणी ॥२६॥

सुकर्णरसना नासा चक्षुः स्पपर्शवती रसा ।
गन्धप्रिया सुगन्धा च सुस्पर्शा च मनोगतिः ॥२७॥

मृगनाभिर्मृगाक्षी च कर्पूरामोदधारिणी ।
पद्मयोनिः सुकेशी च सुलिङ्गा भगरूपिणी ॥२८॥
योनिमुद्रा महामुद्रा खेचरी खगगा मिनी ।
मधुश्रीर्माधवीवल्ली मधुमत्ता मदोद्धता ॥२९॥

मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षुचापिनी ।
रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्तपुष्पावतंसिनी ॥३०॥

शुभ्राम्बरधरा धीरा महाश्वेता वसुप्रिया ।
सुवेणिः पद्महस्ता च मुक्ताहारविभूषणा ॥३१॥

कपर्पूरामोदनिःश्वासा पद्ममन्दिरा ।
खड्गिनी चक्रहस्ता च भुसुण्डी परिघायुधा ॥३२॥

चापिनी पाशहस्ता च त्रिशूलवरधारिणी ।
सुबाणा शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।। ३३।।

वरायुधधरा वीरा वीरपानमदोत्कटा ।
वसुधा वसुधारा च जया शाकम्भरी शिवा ।।३४।।

विजया च जयन्ती च सुस्तनी शत्रुनाशिनी ।
अन्तर्वत्नी वेदशक्तिर्वरदा वरधारिणी ।।३५।।

शीतला च सुशीला च बालग्रहविनाशिनी ।
कुमारी च सुपर्वा च कामाख्या कामवन्दिता ।।३६।।

जालन्धरधराऽनन्ता कामरूपनिवासिनी ।
कामबीजवती सत्या सत्यधर्मपरायणा ।।३७।।

स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी ।
षट्कोणा च त्रिकोणा च त्रिनेत्रा त्रिपुरसुंन्दरी ।।३८।।

वृषप्रिय वृषारूढा महिषासुरघातिनी ।
सुम्भदर्पहरा दीप्ता दीप्तपावकसन्निभा ।।३९।।

कपालभूषणा काली कपालमालभारिणी ।
कपालकुण्डला दीर्घा शिवादूती घनध्वनिः ।।४०।।

सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्गप्रबोधिनी ।
कम्बुग्रीवा वसुमती छत्रच्छायाकृतालया ।।४१।।

जगद्गर्भा कुण्डलिनी भुजगाकारशायिनी ।
प्रोल्लसत्सप्तपद्मा च नाभिनालमृणालिनी ।।४२।।

मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्डकृतालया ।
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया ॥४३॥

श्वासोच्छासगतिर्जीवा ग्राहिणी वह्निसंश्रया ।
वह्नितन्तुसमुत्थाना षड्रसास्वादलोलुपा ॥४४॥

तपस्विनी तपःसिद्धिः तापसी च तपः प्रिया ।
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसः सिद्धिदायिनी ॥४५॥

सप्तधातुमयी मूर्तिः सप्तधात्वन्तराश्रया ।
देहपुष्टिर्मनस्तुष्टिरन्नपुष्टिर्बलोद्धता ॥४६॥

ओषधिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिः प्रभाविनी ।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी ॥४७॥

मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ्मृगलोचना ।
वागुरा बन्धरूपा च वधरूपा वधोद्धता ॥४८॥

बन्दी बन्दिस्तुताकारा काराबन्धविमोचनी ।
शृङ्खला खलहा विद्युद्दृढबन्धविमोचनी ॥४९॥

अम्बिकाऽम्बालिकाचाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता ।
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुलपूजिता ॥५०॥

कालचक्रभ्रमा भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी ।
वात्याली मेघमाला च सुवृष्टिः सस्यवर्द्धिनी ॥५१॥

अकारा च इकारा च उकारैकाररूपिणी ।
ह्रींकारी बीजरूपा च क्लींकाराम्बरवासिनी ॥५२॥

सर्वाक्षरमयीशक्तिरक्षरा वर्णमालिनी ।
सिन्दूरारुणवक्त्रा च सिन्दूरतिलकप्रिया ॥५३॥

वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी ।
नृपवश्या नृपैःसेव्या नृपवश्यकारी क्रिया ॥५४॥

महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी ।
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्यविवर्द्धिनी ॥५५॥

चतुर्वर्णमयीमूर्तिश्चतुर्वर्णैश्चपूजिता ।
सर्वधर्ममयीसिद्धिश्चतुराश्रमवासिनी ॥५६॥

ब्रह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्राचावरवर्णजा ।
वेदमार्गरता यज्ञा वेदविश्वविभाविनी ॥५७॥

अस्त्रशस्त्रमयोविद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी ।
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ॥५८॥

गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया ।
त्रिसन्ध्या त्रिपदी धात्री सुपर्वा सामगायनी ॥५९॥

पाञ्चाली बालिका बालां बालक्रीडा सनातनी ।
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ॥६०॥

सुरारिघातिनीकृत्या पूतना च तिलोत्तमा ।
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ॥६१॥

पट्टाम्बरधरा गीतिः सुगीतिर्ज्ञानलोचना ।
सप्तस्वरमयीतन्त्री षड्जमध्यमधैवता ॥६२॥

मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्डकृतालया ।
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया ॥४३॥

श्वासोच्छ्वासगतिर्जीवा ग्राहिणी वह्निसंश्रया ।
वह्नितन्तुसमुत्थाना षड्रसास्वादलोलुपा ॥४४॥

तपस्विनी तपःसिद्धिः तापसी च तपः प्रिया ।
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसः सिद्धिदायिनी ॥४५॥

सप्तधातुमयीमूर्तिः सप्तधात्वन्तराश्रया ।
देहपुष्टिर्मनस्तुष्टिरन्नपुष्टिर्बलोद्धता ॥४६॥

ओषधिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिः प्रभाविनी ।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी ॥४७॥

मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ्मृगलोचना ।
वागुरा बन्धरूपा च वधरूपा वधोद्धता ॥४८॥

बन्दी बन्दिस्तुताकारा काराबन्धविमोचनी ।
शृङ्खला खलहा विद्युद्दृढबन्धविमोचनी ॥४९॥

अम्बिकाऽम्बालिकाचाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता ।
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुलपूजिता ॥५०॥

कालचक्रभ्रमा भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी ।
वात्याली मेघमाला च सुवृष्टिः सस्यवर्द्धिनी ॥५१॥

अकारा च इकारा च उकारैकाररूपिणी ।
ह्रींकारी बीजरूपा च क्लींकाराम्बरवासिनी ॥५२॥

सर्वाक्षरमयीशक्तिरक्षरा वर्णमालिनी ।
सिन्दूरारुणवक्त्रा च सिन्दूरतिलकप्रिया ॥५३॥

वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी ।
नृपवश्या नृपैःसेव्या नृपवश्यकारी क्रिया ॥५४॥

महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी ।
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्यविवर्द्धिनी ॥५५॥

चतुर्वर्णमयीमूर्तिश्चतुर्वर्णैश्चपूजिता ।
सर्वधर्ममयीसिद्धिश्चतुराश्रमवासिनी ॥५६॥

ब्रह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्राचावरवर्णजा ।
वेदमार्गरता यज्ञा वेदविश्वविभाविनी ॥५७॥

अस्त्रशस्त्रमयोविद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी ।
सुमेधा सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ॥५८॥

गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया ।
त्रिसन्ध्या त्रिपदी धात्री सुपर्वा सामगायनी ॥५९॥

पाञ्चाली बालिका बाला बालक्रीडा सनातनी ।
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ॥६०॥

सुरारिघातिनीकृत्या पूतना च तिलोत्तमा ।
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ॥६१॥

पट्टाम्बरधरा गीतिः सुगीतिर्ज्ञानलोचना ।
सप्तस्वरमयीतन्त्री षड्जमध्यमधैवता ॥६२॥

मूर्च्छनाग्रामसंस्थाना ऽस्वस्था स्त्रस्थानवासिनी ।
अट्टाट्टहासिनी प्रेता प्रेतासननिवासिनी ॥६३॥

नृत्तगीतप्रियाऽकामा तुष्टिदा पुष्टिदाक्षया ।
निष्ठा सत्यप्रिया प्रज्ञा लोकेशी च सुरोत्तमा ॥६४॥

सविषा ज्वालिनी ज्वाला विषमोहार्तिनाशिनी ।
विषारिर्नागदमनी कुरुकुल्लाऽमृतोद्भवा ॥६५॥

भूतभीतिहरारक्षा भूतावेशविनाशिनी ।
रक्षोघ्नी राक्षसी रात्रिर्दीर्घनिद्रा दिवागतिः ॥६६॥

चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाचरी ।
डाकिनी शाकिनी शिष्या हाकिनी चक्रवाकिनी ॥६७॥

सितासितप्रिया स्वङ्गा सकला वनदेवता ।
गुरुरूपधरा गुर्वी मृत्युर्मारी विशारदा ॥६८॥

महामारी विनिद्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशिनी ।
चन्द्रमण्डलसकाशा चन्द्रमण्डलवासिनी ॥६९॥

अणिमादिगुणोपेता सुस्पृहा कामरूपिणी ।
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ॥७०॥

अनादितिधनापुष्टिश्चतुर्बाहुर्चतुर्मुखी ।
चतुःसमुद्रशयना चतुर्वर्गफलप्रदा ॥७१॥

काशपुष्पप्रतीकाशा शरत्कुमुदलोचना ।
भूता भव्या भविष्या च शैलजा शैलवासिनी ॥७२॥

वाममार्गरता वामा शिववामाङ्गवासिनी ।
वामाचारप्रिया तुष्टा लोपामुद्रा प्रबोधिनी ।।७३।।

भूतात्मा परमात्मा च भूतभाविभाविनी
मङ्गला च सुशीला च परमार्थप्रबोधिका ।।७४।।

दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रिया ।
योगिनी योगयुक्ता च योगाङ्गा ध्यानशालिनी ।।७५।।

योगपट्टधरा मुक्ता मुक्तानां परमागतिः ।
नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ।।७६।।

धर्मदा धनदा चैव कामदा मोक्षता द्युतिः ।
साक्षिणी क्षणदा दक्षा दक्षजा कोटिरूपिणी ।।७७।।

क्रतुः कात्यायनी स्वच्छा स्वच्छन्दा च कविप्रिया ।
सत्यागमा बहिःस्था च काव्यशक्तिः कवित्वदा ।।७८।।

मेनापुत्री सतीमाता मैनाकभगिनो तडित् ।
सौदामिनी स्वधामा च सुधामा धामशालिनी ।।७९।।

सौभाग्यदायिनीद्यौश्च सुभगा द्युतिर्वर्द्धिनी ।
श्री कृत्तिवसना चैव कङ्काली कलिनाशिनी ।।८०।।

रक्तबीजवधोद्दृप्ता सुतन्तुर्बीजसन्ततिः ।
जगज्जीवा जगद्बोजा जगत्त्रयहितैषिणी ।।८१।।

चामीकररुचिश्चान्द्रीसाक्षयाषोडशीकला ।
यत्तत्पदानुबन्धा च यक्षिणी धनदार्चिता ।।८२।।

चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी ।
चामुण्डा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्डवधोद्धुरा ॥८३॥

अष्टम्येकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशो ।
अमा कलशहस्ता च पूर्णकुम्भधरा धरा ॥८४॥

अभीरुर्भैरवी भीमा भीरा त्रिपुरभैरवी ।
महारुण्डा च रौद्री च महाभैरवपूजिता ॥८५॥

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा करालदशनानना ।
कराला विकराला च घोरघुर्घुरनादिनी ॥८६॥

रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धूककुसुमारुणा ।
कादम्बरी पटासा च काश्मीरी कुंकुमप्रिया ॥८७॥

क्षान्तिर्बहुसुवर्णा च रतिर्बहुसुवर्णदा ।
मातङ्गिनी वरारोहा मत्तमातङ्गगामिनी ॥८८॥

हिंसा हंसगतिर्हंसी हंसोज्जवलशिरोरुहा ।
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा स्मितास्या श्यामकुण्डला ॥८९

मषी च लेखिनी लेख्या सुलेखा लेखकप्रिया ।
शङ्खिनी शंखहस्ता च जलस्या जलदेवता ॥९०॥

कुरुक्षेत्रावनिः काशी मथुरा काञ्च्यवन्तिका ।
अयोध्या द्वारका माया तीर्था तीर्थंकरप्रिया ॥९१॥

त्रिपुष्कराऽप्रमेया च कोशस्था कोशवासिनी ।
कौशिकी तु कुशावर्ता कौशाम्बी कोशवर्द्धिनी ॥९२॥

कोशदा पद्मकोशाक्षी कुसुमा कुसुमप्रिया ।
तोतुला च तुलाकोटि कूटस्था कोटराश्रया ॥९३॥

स्वयम्भूश्च सुरूपा च स्वरूपा रूपवर्द्धिनी ।
तेजस्विनी सुभिक्षा च बलदा बलदायिनी ॥९४॥

महाकोशी महावर्ता बुद्धिः सदसदान्मिका ।
महाग्रहहरा सौम्या विशोका शोकनाशिनी ॥९५॥

सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृता ।
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभाविनो ॥९६॥

अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी ।
शंकराकल्पिनीकल्पा मनः संकल्पसन्नतिः ॥९७॥

सर्वलोकमयीशक्तिः सर्वश्रवणगोचरा ।
सर्वज्ञानवतीवाञ्छा सर्वतत्त्वानुबोधिनी ॥९८॥

जाग्रती च सुषुप्तिश्च स्वप्नावस्था तुरीयका ।
त्वरा मन्दगतिर्मन्दा मदिरामोदधारिणी ॥९९॥

पानभूमिः पानपात्रा पानदानकरोद्यता ।
आघूर्णारुणनेत्रा च किंचिदव्यक्तभाषिणी ॥१००॥

आशापूरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षितपूजिता ।
नागवल्ली नागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ॥१०१॥

सर्वशास्त्रवतीविद्या सुम्मृतिर्धर्मवादिनी ।
श्रुतिः श्रुतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातलवासिनी ॥१०२॥

मीमांसा तर्कविद्या च सुभक्तिर्भक्तवत्सला ।
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीरा भाववर्जिता ॥१०३॥

नागपाशधरामूर्तिरगाधा नागकुण्डला ।
सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोणनिवासिनी ॥१०४॥

सर्वमन्त्रमयीविद्या सर्वमन्त्राक्षरावलिः ।
मधुस्रवा स्रवन्ती च भ्रामरी भ्रमरालका ॥१०५॥

मातृमण्डलमध्यस्था मातृमण्डलवासिनी ।
कुमारजननी क्रूरा सुमुखो ज्वरनाशिनी ॥१०६॥

अतीता विद्यमाना च भाविनो प्रीतिमञ्जरी ।
सर्वसौख्यवतीयुक्तिराहारपरिणामिनो ॥१०७॥

निदानंपञ्चभूतानां भवसागरतारिणी ।
अक्रूर च ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता ॥१०८॥

रोहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कालवर्तिनी ।
कलंकरहितानारी चतुष्षष्टचभिधावती ॥१०९॥

जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च नूतना नववल्लभा ।
अरजा रतिः प्रीतिर्रतिरागविवर्द्धिनी ॥११०॥

पञ्चवातगतिभित्रा पञ्चश्लेष्माशयाधरा ।
पञ्चपित्तवतीशक्तिः पञ्चस्थानविबोधिनी ॥१११॥

उदक्या च वृषस्यन्ती बहिःप्रस्रविणीत्र्यहम् ।
रजःशुक्रधराशक्तिर्जरायुर्गर्भधारिणी ॥११२॥

त्रिकालजा त्रिलिङ्गा च त्रिमूर्तिः त्रिपुरवासिनी ।
अरागा शिवतत्त्वा च कामतत्त्वानुरागिणी ॥११३॥

प्राच्यवाची प्रतीचीदिक् उदीचीदिक् विदिग्दिशाम् ।
अहंकृतिरहंकारा बलिमाया बलिप्रिया ॥११४॥

स्रुकस्रुवा सामिधेनी च सश्रद्धा श्राद्धदेवता ।
माता मातामही तृप्तिः पितृमाता पितामही ॥११५॥

स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया ।
स्तनदा स्तनधारा च विश्वयोनिः स्तनन्धयी ॥११६॥

शिशूत्सङ्गधरा दोला दोलाक्रीडाभिनन्दिनी ।
उर्वशी कदली केका विशिखा शिखिनर्तिनी ॥११७॥

खट्वाङ्गधारिणी स्वट्वा वाणपुङ्खानुवर्तिनी ।
लक्ष्यप्राप्तिः कलाऽलक्ष्या लक्षया च शुभलक्षणा ॥११८॥

वर्तिनी सुपथाचारा परिखा च खनिर्वृति ।
प्राकारवलया बेला मर्यादा च महोदधौ ॥११९॥

पोषणीशोषणीशक्तिर्दोर्केशी सुलोमशा ।
ललिता मांसला तन्वी वेदवेदाङ्गधारिणी ॥१२०॥

नरासृक्पानमना च नरमुण्डास्थिभूषणा ।
अक्षक्रीडारतिः शारी शारिकाशुकभाषिणी ॥१२१॥

शाम्बरी गारुडीविद्या वारुणी वरुणार्चिता ।
वाराही मुण्डहस्ता च दष्ट्रोद्धतवसुन्धरा ॥१२२॥

मीनमूर्तिधरा मूर्त्ता वदन्या प्रतिमाश्रया ।
अमूर्ता निधिरूपा च सालिग्रामशिलाशुद्धि ॥१२३॥

स्मृतिः संस्काररूपा च सुसंस्कारा च संस्कृति ।
प्राकृता देशभाषा च गाथा गीतिः प्रहेलिका ॥१२४॥

इडा च पिङ्गला पिङ्गा सुषुम्णा सूर्यवाहिनी ।
शशिस्रवा च तालस्या काकिन्यमृतजीविनां ॥१२५॥

अणुरूपा बृहद्रूपा लघुरूपा गुरुस्थिरा ।
स्थावरा जङ्गमा देवी कृतकर्मफलप्रदा ॥१२६॥

विषयाक्रान्तदेहा च निर्विशेषा जितेन्द्रिया ।
विश्वरूपा चिदानन्दा परब्रह्मप्रबोधिनी ॥१२७॥

निर्विकारा च निर्वैरा विरतिः सत्यवर्धिनी ।
पुरुषाज्ञा च भिन्ना च क्षान्तिः कैवल्यदायिनी ॥१२८॥

विविक्तसेविनी प्रज्ञाजनयित्री बहुश्रुतिः ।
निरोहा च समस्तैका सर्वलोकैकसेविता ॥१२९॥

सेवा सेवाप्रिया सेव्या मेवाफलविवर्द्धिनी ।
कलौ कल्किप्रिया काली दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ॥१३०॥

प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः खड्गधारा दुरानति ।
अश्वप्लुतिश्च वल्गा च मृणिः सन्मत्तवारणा ।११३१॥

वीरभूर्वीरमाता च वीरसूर्वीरनन्दिनी ।
जयश्रीर्जयदीक्षा च जयदा जयवर्द्धिनी ॥१२३॥

सौंभाग्यसुभगाकारा सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी ।
क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा सत्कीर्तिः पथिदेवता ।।१३३।।

सर्वतीर्थमयीमूर्तिः सर्वदेवमयीप्रभा ।
सर्वसिद्धिप्रदाशक्ति सर्वमङ्गलमग्ङला ।।१३४।।

पुण्यं सहस्त्रनामेदमं बायारुद्रभाषितम् ।। चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नंदिकेन प्रकाशितम् नातः परतरः स्तवः नातः परतराविद्या तीर्थे नातः परात्परम् । ते धन्यकृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः । एकवारं मुदानित्यं येऽर्चयंतिम हेश्वरीम् । देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता ।। भूयात्सा वरदा लोके साधूनांविश्वमंगला एतामेव पुराराध्यां विद्यांत्रिपुर भैरवीम् त्रैलोक्यमोहिनीरूपम कार्षीद्भगवान् हरिः ।।

इति भवानीनामसहस्त्रः स्तवराजः संपूर्णः

अथ इन्द्राक्षी स्तोत्रम

ॐ अस्य श्रीइंद्राक्षीस्तोत्रमंत्रस्य पुरंदरऋषिः अनुष्टुप्छंदः इंद्राक्षी देवता । ह्रीं बीजम् ।। क्लीं कील कम् ।। सकलकामनासिद्धर्थे पाठ विनियोगः अथ ध्यानम् । इंद्राक्षीं द्विभजा देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम् ।। वामे हस्ते वज्रधरां दक्षिणेचाभयप्रदाम् ।। सहस्त्रनेत्रां सूर्याभां नानालं कारमूषिताम् प्रसन्नवदनां नित्यमप्स.—रोगण सेविताम् ।। श्रीदुर्गांसौम्यवदना पाशांकुधरांपराम्

त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् । इ
ध्यानम् । ॐ ह्रीं श्रीं इंद्राक्षीं स्वाहा ॥ इंद्र उवाच
इंद्राक्षी नाम सा देवी दैवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभ
देवी दुर्गानाम्नातिवि श्रुता ॥ कात्यायनी महाद
चंद्र घंटा महातपाः ॥ गायत्री सा च सावि
ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥ नारायणी भद्रकाली रुद्रा
कृष्णपिंगला अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरा
स्तपस्विनी ॥ मेघ श्यामा सहस्राक्षी विष्णुमा
ज्लोदरी महोदरी मुक्तकेशी घोर रूपा महाबला
आनंदा भद्रजा नंदा रोगहंत्री शिवप्रिया शिवदू
कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी । इंद्राणी चंद्ररू
च इंद्रशक्तिपरायणा महिषासुरसहत्रा चामुंडागर्भदेव
वाराही नारसिंही च भीमा भैरव नादिनी श्रु
स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥ आनं
विजया पूर्णामानस्तोकापराजिता भवानी पार्वती दु
हैमवत्यंबिका शिवा । शिवा भवानी रुद्राण
शंकरार्धशरी-रिणी ऐतैर्नामपदैर्दिव्यै स्तुता शक्रे
धीमता आयुरारोग्यमैश्वर्यें सुखसंपत्तिकारकम्
क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनि वारणम् ॥ शतमावर्तये
द्यस्तु मुच्य ते व्याधिबंधनातु आवर्तयेत्सहस्रे ण लभ
वांछितं फलम् ॥ राज्यवश्यमावाप्नोतिसर्वमेव
संशयःलक्षमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्दे वोभविष्यति
त्रिकालंपठतेनित्यं धनधान्यं च संपदः अर्धरात्रे पठेन्नित
मुच्यते पापबंधनात ॥ इदं स्तोत्र मिदं पुण्यं ज
तु फलमाप्नु यात् विनाशयतिरोनाणामपमृत्यं हरत्युत ॥

राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनम् इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थीधर्ममक्षयम् ॥ विद्यार्थी लभतेविद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥ इंद्रेण कथितं स्तोत्रं सत्य मेव न संशयः। या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहि-षोन्मूलिनी । या धूम्रेक्षणचण्डमुमथिनी या रक्तबीजाशनी ॥ शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा । सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ॥ ॥ जप्तं पापहरं नुतं बलकरं सम्पूजितं श्रीकरं ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं सम्भाषितं सिद्धिदम् । गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते ते पाद-पद्मद्वयं भक्तानां भवभीतिभञ्जनकरं सिद्धयष्टदं पातु नः ॥ ॥ माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी। शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ॥ अनेन मंत्रपाठेन आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवा-रणार्थं श्रीइष्टदेवीप्रीत्यर्थं भगवती अमा कामा चार्वङ्गी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिकाभगवती श्रीशारदाभगवती श्रीमहाराज्ञी भगवती श्रीज्वाला-भगवती व्रीडाभगवती वैखरीभगवती वितस्ताभगवती गङ्गाभगवती यमुनाभगवती कालिकाभगवती सिद्धलक्ष्मीः महालक्ष्मीः महात्रिपुरसुन्दरी सहस्रनाम्नी देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयतां प्रीतास्तु ॥ इति इन्द्राक्षीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ नमः सवित्रे जंगदेकचक्षुषे जगत्प्रसूतिस्थितिनाशहेतवे । त्रयीमयाय त्रिगुणात्मधारिणे

विरिञ्चिनारायण शङ्करात्मने ॥ नमो नमस्ते जगदेकसाक्षिणे भूतादिमन्त्रैर्विनियोगहेतवे । सरोजसम्भूतमरोजशङ्खभृत्पिनाक—भृत्पूजित पत्कजाय ते ॥ यस्योदयेनेह जगत्प्रबुध्यते प्रवर्तते चाखिलकर्मसिद्धये । ब्रह्मेन्द्रनारायण रुद्रवन्दितः स नः सदा यच्छतु मङ्गलं रविः ॥ नमोस्तु सूर्याय सहस्ररश्मये, सहस्रशाखान्वितसम्भवात्मने । सहस्रयोगोद्भवभूतिभागिने सहस्रसंख्यायुगधारिणे नमः, यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्, दारिद्रयदुः खक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेणयम् । यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं ब्रह्मर्षिदेवर्षिनृपर्षिभावितम् । तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेणयम् यन्मण्डलं ज्ञानघनंत्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् । समस्ततेजोमयदिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेणयम् । यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् । यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु० ॥ यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुःसामसु संप्रगीतम् । प्रकाशितं येन च भूर्भुवःस्वः पुनातु० ॥ यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसंधाः । यद्योगिनो व्योमरथस्थसिद्धाः पुनातु० मां० ॥ यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके यत्कालकालाद्यमनादिरूपं पुनातु मां तत्स० ॥ यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखाख्यं यदक्षंर पापहरे जनानाम् । यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु० । यन्मण्डलं विश्वसृजां प्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम् । यस्मिं-

जगत्संहरते समग्रं पुनातु० ।। यन्मणडलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्तवम् । सूक्ष्मान्तरै र्योगपथानुगम्यं पुनातु मातत्सावितुर्वरणयम्

इति श्री इन्द्राक्षीस्त्र

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम् अपि चेतांसि देवी भगवती हिसा ।
बलात-अकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।।१।।

दर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि ।

दारि-द्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता ।।२।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।३।।

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।४।।

सर्व-स्वरूपे सर्वशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।।५।।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान् ।।६।।

विरिञ्चिनारायण शङ्करात्मने ॥ नमो नमस्ते जगदेकसाक्षिणे भूतादिमन्त्रैविनियोगहेतवे । सरोजसम्भूतमरोजशङ्खभृत्पिनाक—भृत्पूजित पत्कजाय ते ॥ यस्योदयेनेह जगत्प्रबुध्यते प्रवर्तते चाखिलकर्मसिद्धये । ब्रह्मेन्द्रनारायण रुद्रवन्दितः स नः सदा यच्छतु मङ्गलं रविः॥ नमोस्तु सूर्याय सहस्ररश्मये, सहस्रशाखान्वितसम्भवात्मने । सहस्रयोगोद्भवभूतिभागिने सहस्रसंख्यायुगधारिणे नमः, यन्मण्डलं दीप्तिकरं विशालं, रत्नप्रभं तीव्रमनादिरूपम्, दारिद्रयदुः खक्षयकारणं च पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । यन्मण्डलं देवगणैः सुपूजितं ब्रह्मर्षिदेवर्षिनृपर्षिभावितम् । तं देवदेवं प्रणमामि सूर्यं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् यन्मण्डलं ज्ञानघनंत्वगम्यं त्रैलोक्यपूज्यं त्रिगुणात्मरूपम् । समस्ततेजोमयदिव्यरूपं पुनातु मां तत्सवितुर्वरेण्यम् । यन्मण्डलं गूढमतिप्रबोधं धर्मस्य वृद्धिं कुरुते जनानाम् । यत्सर्वपापक्षयकारणं च पुनातु० ॥ यन्मण्डलं व्याधिविनाशदक्षं यदृग्यजुःसामसु संप्रगीतम् । प्रकाशितं येन च भूर्भुवःस्वः पुनातु० ॥ यन्मण्डलं वेदविदो वदन्ति गायन्ति यच्चारणसिद्धसंधाः । यद्योगिनो व्योमरथस्थसिद्धाः पुनातु० मां० ॥ यन्मण्डलं सर्वजनेषु पूजितं ज्योतिश्च कुर्यादिह मर्त्यलोके यत्कालकालाद्यमनादिरूपं पुनातु मां तत्स० ॥ यन्मण्डलं विष्णुचतुर्मुखाख्यं यदक्षर पापहरे जनानाम् । यत्कालकल्पक्षयकारणं च पुनातु० । यन्मण्डलं विश्वसृजं प्रसिद्धमुत्पत्तिरक्षाप्रलयप्रगल्भम् । यस्मिं-

जगत्संहरते समग्रं पुनातु० ।। यन्मणडलं सर्वगतस्य विष्णोरात्मा परं धाम विशुद्धतत्त्वम् । सूक्ष्मान्तरैर्योगपथानुगम्यं पुनातु मातत्सावितुर्वरणयम्

इति श्री इन्द्राक्षीस्त्र

सप्तश्लोकी दुर्गा

ज्ञानि-नाम् अपि चेतांसि देवी भगवती हिसा ।
बलात-अकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।।१।।

दर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि ।

दारि-द्रय-दुःख-भय-हारिणि का त्वत्-अन्या
सर्वोप-कार-करणाय दयार्द्र-चिता ।।२।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके,
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।३।।

शरणागत-दीर्नात-परित्राण-परायणे
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।।४।।

सर्व-स्वरूपे सर्वशे सर्व-शक्ति-समन्विते,
भयेभ्यस्त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोस्तुते ।।५।।

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि तुष्टा
रुष्टा-तु कामान् सकलान्-अभीष्टान् ।।६।।

त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणां
त्वाम्-आश्रिता ह्या श्रयतां प्रयान्ति ॥६॥

सर्वा-बाधा-प्रशमनं त्रैलोक्य-स्याखिलेश्वरि
एवम्-एव त्वया कार्यम्-अस्मत्-वैरि-विनशनम् ॥

इति सप्तश्लोकी दुर्गा समाप्ता

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूरक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥१

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्धयै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भुभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमों जगत्प्रष्ठिायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥

या देबी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥

या देवी सर्वभूतेषु शन्तिरूपेण संथिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो: ॥२०॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिले षुया ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ।।२७।।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत् ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ।।२८।।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।।२९।।

या साम्प्रत चोद्धतदैत्यापितै-
रणोभेरीशा च सुरैर्नमस्यते ।

या च स्मृता तत्क्षणभेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।।३०।।

अथ गौरीस्तुतिः ।।

ॐ लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिललोकां लोकातीतैर्योगिभिर-
न्तर्हृदि मृग्याम् ।
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षी-
महमीडे ।।१।।

आशापाशकलेशविनाशं विदधानां पादाम्भोजध्यानपराणां
पुरुषाणाम् :
ईशीमीशाङ्गार्धहरां तां तनुमध्यां गौरीमम्बा० ।।२।।

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां नित्यं चित्ते नि
काष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तडिदाभां गौरी० ॥३॥

चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्त्रां चन्द्रापीडालङ्कृत
लकमाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां गौरी० ॥४॥

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि व्याप्य स्वैरं क्री
यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां गौरी० ॥५॥

मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं सौरं चान्द्रं
विहाय ज्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामभिवन्द्यां गौरी० ॥६॥

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं भूते भूते भूत
प्रसवित्रीम् ।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां गौरी० ॥७॥

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं भूयो
प्रादुरभूदक्षतमेव ।
भर्त्रा साधं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौरी० ॥८॥

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला सूत्रे यद्वत्क्कापि
चाप्यचरं च ।

तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां गौरी० ॥९॥

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः
सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राणक्रीडनशीलां शिवपत्नीं गौरीम० ॥१०॥

प्रातःकाले भावविशुद्धिं विदधानो भक्त्या नित्यं जल्पति
गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिमुच्चैः शिवभक्तिं तस्यावश्यं पर्वत-
पुत्री विदधाति ॥११॥

इति गौरी स्तुतिः समाप्ता

अथ देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाव्हानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।

न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥

विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया
विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।

तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।

मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया ।

तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥

परित्यक्ता देवा विविधविधसेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतरविकमपनीते तु वयसि ।

इदानी चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कंयामि शरणम् ॥५॥

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।

कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥७॥

न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।

अतस्त्वां संयाचे जननि ननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ।।८।।

नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्षचिन्तनरैनं कृतं वचोभिः ।

श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ।।९।।

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं
करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि ।

नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः
क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ।।१०।।

जगदम्ब विचित्रमत्र किं
परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि ।

अपराधपरम्परापरं
न हि माता समुपेक्षते सुतम् ।।११।।

मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ।।१२।।

शिवमहिम्नस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

ॐ महिम्नः पारन्ते परमऽविदुषो यद्यसदृशी-
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।

अथाऽवाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।।१।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोर
तद्व्यावृत्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्ववर्चीने पतति न मनः कस्य न वचः ।।२।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन्किं वागऽपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन ! बुद्धिर्व्यवसिता ।।३।।

तवैश्र्वर्य्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीम्
विहन्तुंव्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ।।४।।

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम्
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानइति च ।
अतर्क्यैश्वर्य्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम् ।।५।।

अजन्मानो लोकाः किमऽवयववन्तोऽपि जगताम्
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर ! संशेरत इमे ।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषाम्
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥७॥

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद ! तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥८॥

ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्व ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन ! तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जजह्मि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥९॥

तवैश्वर्य्यं यत्नाद् यदुपरि बिरञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्दवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिश ! यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलति ॥१०॥

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरम्
दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्म-श्रेणी-रचित-चरणाम्भोरुह-बलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्ते स्त्रिपुरहर ! विस्फूर्जितमिदम् ॥११॥

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनम्
बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।

अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठात्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यतिखलः ॥१२॥

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न
कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥१३॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्याऽसीद्यस्त्रिनयन ! विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥१४॥

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि संदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत
स्मरःस्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥१५॥

मही पादाघाताद व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यदभुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यभृतजटाताडिततटना
जगद्रक्षायै त्वं नठसि ननु वामैव विभुता ॥१६॥

वियदव्यापी तारागणगुणितफनोदगमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि-
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम ! दिव्यं तव वपुः ॥१७॥

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलुपरतन्त्राः प्रभुधियः ॥१८॥

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकलम्
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणांरक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥१९॥

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वाँ सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥२०।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद ! सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवंकर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः ॥२१॥

प्रजानाथं नाथ ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तंतेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥२२॥

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि सकोपव्यतिकरः ॥

यतोभग्ने गुह्ये सकृदऽपि सपर्या विदधतां
ध्रुवुवंमोक्षो श्लीलं किमपि पुरुषार्थंप्रसविते ॥२३॥

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमन्हाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्टवा पुरमथन ! पुष्पायुधमपि
यदि स्त्रैणंदेवी यमनिरतदेहार्धघटना-
दवैतित्वामद्धावत वरद ! मुग्धा युवतयः ॥२४॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर ! पिशाचाःसहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद ! परमं मङ्गलमसि ॥२५॥

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमविधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये-
दधत्यन्तस्तत्त्वंकिमपि यमिनस्तत्किलभवान् ॥२६॥

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः ।
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमु धरणिरात्मात्वमितिच
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रति गिरम
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वंनभवसि ॥२७॥

त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमितिपदम् ॥२८॥

भवःशर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथाभीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मैधाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मिभवते ॥२९॥

वपुष्प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारे ! नैवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः सम्प्रत्यतनुरहमग्रेप्यनतिमान
महेश ! क्षन्तव्यं तदिदमपराधद्वयमपि ॥३०॥

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव ! दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर ! महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन ! यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मैते तदिदमिति सर्वाय च नमः ॥३१॥

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्येशिवाय नमो नमः ॥३२॥

श्रीपुष्पदन्त मुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवतिर्महेशः ॥

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिः ॥

भैरव स्तुति

व्याप्तचराचर भावविशेषं
चिन्मयमेकम अनन्तम अनादिम् ।
भैरवनाथम अनाथ शरण्यं
तन्मयचित्ततया हृदि वंदे ॥

त्वन्मयमे तदऽशेषम् इदानीं
भाति मम त्वद् अनुग्रह शक्तया ॥

त्वं च महेश ! सदैव ममात्मा
स्वात्म मयं मम तेन समस्तम् ॥
स्वात्मनि विश्गते त्वयि नाथे
तेन न संसृति भीतिः कथाऽतस्ति ।

सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह
त्रास विधायिषु कर्मगणेषु ।
अन्तक ! मां प्रति मा दृशमेनां
क्रोध करालतमां विदधीहि ।

शंकर सेवन चिन्तन धीरो
भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि ॥

इत्थमु पोद भवन्मय संविद—
दीधितिदारित भूरितमिस्रः ।
मृत्यु यमान्तक कर्मपिशाचै—
नाऽथ नमोस्तु न जातु बिभेमि ॥

प्रोदित सत्य विबोध मरीचि
प्रोक्षित विश्वपदार्थ सतत्त्वः ।

भाव परामृत निर्भर पूर्णे
त्वय्यऽहमात्मनि निर्वृतिमेमि ॥

मानस गोचरमेति यदैव
क्लेशदशाऽतनु तापविधात्री ।

नाथ ! तदैव ममत्वदभेद—
स्तोत्र पराङ्मृतवृष्टिर उदेति ॥

शंकर ! सत्यमिदं व्रतदान—
स्नानतपो भवतापविनाशी ।

तावक शास्त्र परामृतचिन्ता
स्यन्दति चेतसि निर्वृतिधाराः ॥

नृत्यति गायति हृषयति गाढं
संविदियं मम भैरवनाथ ।

त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं
दुर्लभ मन्यजनैः समयज्ञम् ॥

वसुरसपौषै कृष्णदशम्या—
मभिनवगुप्तः स्तवमिमम करोत् ।

येन विभुर्भवमरुसन्तापं
शमयति झटिति जनस्य दयालुः ॥

शंकर स्तुति

अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणागम समये ।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर हरमे हर दुरितम ।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते ।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर. ।

भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशंकर शिवजी शंकर .।

शक्रशासन कृतशासन चत्रुराश्रम विषयै
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिवशंकर शिवजी शंकर............।

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम् ।
कुरु मां निज चरणार्चिन निरतं भव सततं
शिवशंकर शिवजी शंकर ....।

शिवपंचाक्षरस्तोत्रम्

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥१॥

मंदाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दी श्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मंदारपुष्मवहुपुष्पस पूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥२॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृंदसूर्याय दक्षाध्वरना शकाय ।
श्रीनीलकंठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥३॥

वसिष्ठ कुंभोद्भवगौतमार्यमुनींद्रदेवार्चितशेखराय ।
रुद्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥४॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगंबराय तस्म यकाराय नमः शिवाय ॥५॥

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसंनिधौ ।
शिवलोकमाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥६॥

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं शिवपंचाक्षरस्तोत्रं संपूर्णम् ।

शंकर स्तुति

अतिभीषण कटुभाषण यमकिङ्कर पटली
कृतताडन परिपीडन मरणागम समये ।
उमया सह मम चेतसि यमशासन निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर हरमे हर दुरितम ।

अतिदुर्नय चटुलेन्द्रिय रिपुसंचय दलिते
पविकर्कश कटुजल्पित खलगर्हण चलिते ।
शिवया सह मम चेतसि शशिशेखर निवसन
शिवशंकर शिवजी शंकर. ।

भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्
दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्
शिवशंकर शिवजी शंकर .।

शक्रशासन कृतशासन चत्रुराश्रम विषयै
कलिविग्रह भवदुर्ग्रह रिपुदुर्बल समये ।
द्विज क्षत्रिय वनिता शिशु दरकम्पित हृदये
शिवशंकर शिवजी शंकर.............।

भवसम्भव विविधामय परिपीडितवपुषं
दयितात्मज ममताभर कलुषीकृत हृदयम् ।
कुरु मां निज चरणार्चिन निरतं भव सततं
शिवशंकर शिवजी शंकर ....।

March **1977**

23 Wednesday

هر زمان آه آه باید کرد

سوی خوبان نگاه باید کرد

گر گناه است دیدن خوبان

دیده‌ام این گناه باید کرد

بدو چشم مستش جام جم دارم چه غم دارم

دل بزنجیر حلقهٔ گیسوی، خم دارم چه غم دارم

غنی در محفل مست افسوس نمی‌آید

24 Thursday

ز آه ناله بزم زیر و بم دارم چه غم دارم

نگارا به غیر از تو چاره ندارم

بجز فکر وصل تو کاری ندارم

چنان غرق گشتم بدریای وحدت

که تا روز محشر کناری ندارم

1977 March

Monday 21

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Tuesday 22

[illegible]

[illegible]

[illegible]

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगं निर्मलभाषितशोभितलिंगम् ।
जन्मजदु:खविनाशकलिंगं तत्प्रणामि सदाशिवलिंगम ॥१॥

देवमुनिप्रवरार्चितलिगं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् रावण-
दर्पविनाशलिगं तत्प्रण० ॥२॥

सर्वसुगंधिसुलेपितलिगं बुद्धिविवर्धन कारणलिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुरवंदितलिगं नत्प्र० ॥३॥

कनकमहामणिभूषितलिगं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम् ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिगं तत्प्र० ॥४॥

कुंकुमचन्दलेपितलिगं पङ्कज हारसुशोभितलिङ्गम् ।
सञ्चितपापविनाशनलिगं तत्प्र० ॥५॥

देवगणार्चितसेवितलिगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम् ।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिगं तत्प्र० ॥६॥

अष्टदलोपरि वेष्टितलिगं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम् ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिगं तत्प्र० ॥७॥

सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम् ।
परात्परं परमात्मकलिगं तत्प्र० ॥८॥

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं य: पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥

इति श्रीलिंगाष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्

शिवाष्टकम्

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं
जगन्नाथनाथं सदानंदभाजाम्।
भवदभव्य भूतेश्वरं भूतनाथं
शिवं शंकरं शंभुमीशानमीडे ॥१॥

गले रुंडमालं तनौ सर्पजालं,
महाकाल कालं गणंशाधिपालं।
जटाजूट भंगोत्तरंगैर विशालं, शिवं शकरं० ॥२॥

मुदामाकरं मडनं मंडयंतं,
महामंडलं भस्मभूषाधरं तम्।
अनादिं ह्यपारं महामोहमारं शिवं शंकरं० ॥३॥

तटाधोनिवासं महाट्टाट्टहासं,
महापाप नाशं सदा सुप्रकाशं।
गिरीशं गणेशं सुरेशं महेशं, शिवं शंकरं० ॥४॥

गिरन्द्रिात्मजा संगृहीतार्धदेहं,
गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम्।
परब्रह्म ब्रह्मादिभिर्वंद्यमानं शिवं शंकरं० ॥५॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं,
पदांभोजनम्राय कामं ददानम्।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं शंकरं० ॥६॥

शरच्चन्द्रगात्र गुणानन्दपात्रं,
त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्यमित्रम्।
अपर्णा कलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं शंकरं० ॥७॥

हरं सर्पहारं चिताभू विहारं,
भवं वेद सार सदा निर्विकारम् ।
श्मशाने वसंतं मनोजं दहंतं शिवं शंकरं० ॥८॥

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्ता ।
सपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रः समासाद्य मोक्षं प्रयाति ॥९॥

इति श्रीशिवाष्टकं संपूर्णम्

दारिद्रय दुखदहना शिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय,
कर्णामृताय शशि शेखर धारणाय ।
कर्पूरकांतिधवलाय जटाधराय,
दारिद्रय दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥१॥

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय,
कालांतकाय भुजगा धिप कंकणाय ।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्रयदुःख० ॥२॥

भक्तिप्रियाय भवरोगभया पहाय,
उग्राय दुर्ग भवसागर तारणाय ।
ज्योतिर्मयाय गुणनागसुनृत्यकाय दारिद्य० ॥३॥

चर्माम्बराय शवभस्म विलेपनाय,
भालेक्षणाय मणि कुण्ड़ल मंड़िताय ।
मंजीर पाद युगलाय जटा धराय,
दारिद्र दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥४॥

पञ्चननाय फणिराज विभूषणाय,
हेमांशुकाय भुवनत्रय मंड़िताय।
आनन्द भूमि वरदाय तमोमयाय,
दारिद्रय दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥५॥

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय,
कालांतकाय कमलासन पूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय,
दरिद्र दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥६॥

रामप्रियाय रघुनाथवर प्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्ण वतारणाय।
पुष्पेषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्र दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥७॥

मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय,
गीत प्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय,
दारिद्र दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥८॥

वशिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम्।
सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्र पुत्रादिवर्द्धनम्।
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवापनुयात् ॥९॥

इति श्रीवशिष्ठविरचितं दारिद्रय-
दहनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥ शंकर प्रार्थना ॥

प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव निवारय महा-
मृत्युं मृत्युंजय नमोस्तुते।

मृत्युंजय महादेव पाहि मां शरणागतम्,
जन्ममृत्यु जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात् ।

कर्पूर–गौरं करुणावतारं संसार–सारं भुजगेन्द्र–हारम् ।
सदा रमन्तं हृदयारबिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।

हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ ।
शिव शंकर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तुते ।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर,
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।

आधीनाम्–अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् ।
उपद्रवाणां दलनं महादेवम्–उपास्महे ।।

आत्मा त्वं गिरजा मतिः परिचरः प्राणाः शरीरं गृह,
पजा ते विषयो–पभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः ।

संचारोऽपि परिक्रमः पशुपते स्तोत्राणि सर्वा गिरो,
यत्यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय ।
देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।

मातंगचरमाम्बर–भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय,
त्रैलोक्य-नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।

शिवा-मुखाम्भोज-विकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय,
चन्द्रार्क – वैश्वानरलोचनाय, तस्मै – शिकाराय नमः
शिवाय ।।

वशिष्ठकुम्भोतभवगौतमादि मुनीन्द्र वन्द्याय गिरीश्वराय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।।

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय,
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।

वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्–इंद–जन्मनि पुरा ।

पुरारे नैवाहं क्वचित–अपि भवन्तं प्रणतवान् ।।

नमन्मुक्तः सम्प्र – त्यतनुर् – अहम्–अग्रे प्यनतिमान्–
महेश क्षन्तव्यं तत् – इदम् – अपराध – द्वयम् – अपि
कर चरणकृतं वाक्–कायजं कर्मजं वा श्रवण–नयनजं वा
मानसं वा पराधम् ।

विदितम्–अविदितं–वा सर्वम्– एतत्–क्षमस्व,
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।।

बहुरूपगर्भस्तोत्रम् ।

ॐ नमः स्वछन्द भैरवाय

ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्त्यानन्दनिर्भरम् ।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम् ।।१।।

कैलासशिखरासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ।
पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम् ।।२।।

ॐश्रीभैरवः श्री देव्युवाच

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु समयोल्लङ्घनेषु च ।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु ।।३।।

च्छिद्रस्थानेषु सर्वेषु सदुपायं वद प्रभो ।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः ।।४।।

"श्रीभैरवः" शृणु देवि परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् ।।५।।

प्रायश्चित्तेषु सर्वेषु तीव्रेश्वऽपि विमोचनम् ।
सर्वच्छिद्रापहरणं सर्वार्तिविनिवारकम् ।।६।।

समयोल्लङ्घने घोरे जपादेव विमोचनम् ।
भोगमोक्षप्रदं देवि सर्वसिद्धिफलप्रदम् ।।७।।

शतजाप्येन शुद्ध्यंति महापातकिनोऽपि ये ।
तदऽर्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम ।।८।।

कायिकं वाचिकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम् ।
प्रमादादिच्छया वाऽपि सकृज्जाप्येन शुद्ध्यति ।।९।।

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः ।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यास्त्यनोऽपि वा ।।१०।।

निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभावपरिपूरणम् ।
द्रव्यहीने मंत्रहीने यज्ञयोगविवर्जिते ।।११।।

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः
मनोविक्षेपदोषे च विलोपे पशुकी[illegible]ते ।।१२।।

विधिहीने प्रमादे च जप्तव्यं सर्वकर्मसु ।
नाऽतः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः ॥१३॥

नातः परतरा काचित्सम्यक्प्रत्यङ्गिरा प्रिये ।
इयं समयविद्यानां राजराजेश्वरि श्वरि ॥१४॥

परमाऽप्यायनं देवि भैरवस्य प्रकीर्तितम् ।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम् ॥१५॥

स्तवराजमिमं पुण्यं शृण्वष्वाऽवहिता प्रिये ॥१६॥

"अस्य श्रीबहुरूपभट्टारकस्तोत्रस्य, श्रीवामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो० चतुर्वर्ग सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ॥ न्यासं कृत्वा ॥ प्राणायामः ॥"

वामे खेटकपाश शार्ङ्ग विलसद्दण्डं च वीणाण्टिके बिभ्राणं
ध्वजमुदग्रौ स्वनिभदे व्यङ्कं कुठारं करे ।

दक्षेस्यऽङ्क शकन्दलेषुडमरून्वज्रत्रिशूलाभयात्रुद्रस्थं
शरवक्रमिन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः ॥

ॐ बहुरूपाय विद्यम्हे कोटराक्षाय धीमहि ।
तन्नोऽघोरः प्रचोदयान् ॥३॥

"मूलं । अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्चः ।
सर्वथा शर्व सर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेरथः", ॥

ॐ नमः परमाकाशशायिने परमात्मने ।
शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते ।।१।।

अवाच्यायाऽप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे ।
महासामान्यरूपाय सत्तामात्रैकरुपिणे ।।२।।

घौषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे ।
नमः शान्तोग्रघोरा दिभमत्रंसन्दर्भगर्भिणे ।।३।।

रेवतीसङ्गविस्रम्भसमाश्लषविला सिने ।
नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने ।।४।।

भोगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने ।
द्वर्यनिदलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये ।।५।।

सरत्प्रसरविक्षोभविसृष्टाऽखिलजन्तवे ।
नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने ।।६।।

घोरसंसारसंभोगदायिने स्थितिकारिणे ।।
कालादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः ।।७।।

रेहनाय महामोहध्वान्तविध्वंसहेतवे ।
हृदयाम्भोजसंकोचभेदिने शिवभानवे ।।८।।

भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने ।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये ।।९।।

घोष्याय सर्वमन्त्राणां सर्ववाङ्मयमूर्तये ।
नमः शर्वाय सर्वाय सर्वपाशापहारिणे ।।१०।।

रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे ।
नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते ।।११।।

घोषाय परनादान्तश्चराय खचराय ते ।
नमो वाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने ।।१२।।

रमणाय रतीशाङ्गदाहिने चित्रकर्मिणे ।
नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने ।।१३।।

नमः पारप्रतिष्ठाय सर्वान्तपदगाय ते ।
नमः समस्ततत्वाध्वव्यापिने चित्स्वरूपिणे ।।१४।।

रेवद्वराय रुद्राय नमस्ते रूपरूपिणे ।
परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः ।।१५।।

भरिताखिलविश्वाय योगगम्याय योगिनें ।
नमः सर्वेश्वरेशाय महाहंसाय शम्भवे ।।१६।।

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चराय ते ।
रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः ।।१७।।

सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये ।
सर्वभक्षाय सर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने ।।१८।।

रम्याय वल्लभाक्रान्तदेहार्धाय विनोदिने ।
नमः प्रपञ्चदुष्प्राप्यसौभाग्यफलदायिने ।।१९।।

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भववेदिने ।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः ।।२०।।

शक्तिगर्भप्रवोधाय शरण्यायाऽशरीरिणे ।
शान्तिपुष्टयादिसाध्यार्थसाधकाय नमोऽस्तु ते ॥२१॥

रवत्कुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये ।
उत्स्फोटनापटुप्रौडपरमाक्षरमूर्तये ॥२२॥

समस्तव्यस्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने ।
नमस्तुभ्यं महामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे ॥२३॥

रेवारणिसमुदभूतवह्निज्वालावभासिने ।
घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविभेदिने ॥२४॥

भोगिनीस्यन्दनारूप्रौढिमालब्धगर्गीणे ।
नमस्ते सर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने ।२५॥

णफकोटिसमावेश भरिताखिलसृष्टये ।
नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसङ्गिने ।।२६॥

महामोहमलाक्रान्तजीववर्गप्रबोधिने ।
महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे ॥२७॥

स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये ।
नमस्तेऽस्तु महादेवनाम्ने परस्वधात्मने ॥२८॥

रुग्द्राविणे महावीर्यरुरुवंशबिनाशिने ।
रुद्राय द्रावितशेषबन्धनाय नमोनमः ॥२९॥

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोयुक्तशक्तये ।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे ॥३०॥

रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे ।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे च त्रिचक्षुषे ।।३१।।

पेशलोपायलभ्याय भ्रान्तिभाजां महात्मने ।
दुर्लभाय मलाक्रान्तचेतसां तु नमोनमः ।।३२।।

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने ।
भव्यानां तन्मयानां तु सर्वदाय नमोनमः ।।३३।।

अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसारदायिने ।
घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमोनमः ।।३४।।

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभैरवभाषितम् ।
योगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित् ।।३५।।

अदीक्षिते शठे क्रूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते ।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेऽलसे ।।३६।।

गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये ।
निन्दके चुम्भके क्षुद्रेऽसमयज्ञे च दाम्भिके ।।३७।।

दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते ।
भक्तियुक्ते प्रदातव्यं न देयं परदीक्षिते ।।३८।।

पशूनां सन्निधौ देवि नोच्चार्याय सर्वथा क्वचित् ।
अस्यैव स्मृतमात्रस्य विघ्ना नश्यन्ति सर्वशः ।।३९।।

गुह्यका यातुधानाश्च वेताला राक्षसादयः ।
डाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्वाश्च पूतनाः ।।४०।।

नश्यन्ति सर्वे पठित स्तोत्रस्यास्य प्रभावतः ।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा ॥

ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसत्त्वा भयानकाः ।
व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारीमोहविषादयः ॥

गजव्याघ्रादयो भीताःपलायन्ते दिशो दश ।
सर्वेदुष्टाः प्रणश्यन्ति चैत्याज्ञा पारमेश्वरी ॥

इति श्रीललितस्वच्छन्दे बहुरूपगर्भस्तोत्रसततः सम्पूर्णः ।

अथ शिवनिर्वाणस्तुतिः ॥ क्षमापनस्तुतिश्च ॥

जयत्यऽनन्यसामान्यप्रकृष्टगुणवैभवः ।
संसारनाटकारम्भ निर्वाहिनकविः शिवः ॥

ॐ नमः शिवाय भूतभव्यभाविभावभाविने ।
ॐ नमः शिवाय मातृमानमेयकल्पनाजुषे ॥

ॐ नमः० भीमकान्तशान्तशक्तिशालिने ।
ॐ० शाश्वताय शङ्कराय शम्भवे ॥

ॐ० निर्निकेतनिःस्वभावमूर्त्तये ।
ॐ० निर्विकल्पनिष्प्रपञ्चसंविदे ॥

ॐ० निर्मलाय निष्कलाय वेधसे ।
ॐ० पार्थिवाय गन्धमात्रसंविदे ॥

ॐ० षड्रसाधिसाम्यरस्वसृतये ॥१०॥

ॐ० तैजसाय रूपितानिरूपणि ।
ॐ० पावनाय सर्वभावसंस्पृशे ।।

ॐ० नाभसाय शब्दमात्रराविणे ।
ॐ० निर्गलन्मलव्यपायि पायवे ।।

ॐ० विश्वसृष्टिसौष्ठवैकमेधसे ।
ॐ० सर्वतः प्रसारिपादसम्पदे ।।

ॐ० विश्वभोग्यभोगयोग्यपाणये ।
ॐ० वाचकप्रपञ्चवाच्यवाचिने ।।

ॐ० नस्यगन्धसर्वगन्धबन्धवे ।
ॐ० पुग्दलालिलोलकाग्रशालिने ।।२०।।

ॐ० चाक्षुषाय विश्वरूपसन्दृशे ।
ॐ० तग्दुणत्रयविभागभूतये ।।

ओं पौरुषाय भोक्तृदाय मानिने ।
ओं सर्वतो नियन्तृतानियामिने ।।

ओं कामभेदकल्पनोपकल्पिने ।
ओं किञ्चिदेव वत्सताकरासृजे ।।

ओं किञ्चिदेव वेत्तृतोपपादिने ।
ओं सर्वभोग्यवर्धनोपरागिने ।।

ओं शुद्धविद्यतत्त्वमन्त्ररूपिणे ।
ओं दृक्त्तयाविकस्वरेशात्मने ।।३०।।

ओं सर्ववित्प्रभो सदाशिवाय ते ।
ओं वाच्यवाचकादिषङ्क्भित्तये ।।

ओं वर्णमंत्रसत्पदोपपादिने ।
ओं पञ्चधा कलाप्रपञ्चपञ्चिने ।।

ओं सौरजैनबौद्धशुद्धभागिने ।
ओं भक्तिमात्रलभ्यदर्शनाय ते ।।

ओं सर्वतो गरीयसा गरीयसे ।
ओं सर्वतोमहीयसां महीयसे ।।

ओं सर्वतः स्थवीयसां स्थवीयसे ।
ओं तुभ्यमस्त्वणीयसामणीयसे ।।४०।।

ओं मन्दराद्रिकन्दराधिशायिने ।
ओं जाह्नवीजलोज्जवलाभजूटिने ।।

ओं भालचन्द्रचन्द्रिकाकिरीटिने ।
ओं सोमसूर्यवह्निमात्रनेत्र ते ।।

ओं कालकूटकण्ठपीठसुश्रिये ।
ओं धर्मरूपपुङ्गवध्वजाय ते ।।

ओं भस्मधूलिशालिने त्रिशूलिने ।
ओं सर्वलोकपालिने कपालिने ।।

ओं सर्वदैत्यमर्दिने कपर्दिने ।

ओं नित्यनम्रनाकिने पिनाकिने ।।५०।।

ओं नागराजहारिणे विहारिणे ।
ओं शैलजाविलासिने सुखासिने ।।

ओं मन्मथप्रमाथिने पुरप्लुषे ।
ओं कालदेहदाहयुक्तिकारिणे ।।

ओं नागकृत्तिवाससेऽप्यवाससे ।
ओं भीषणश्मशानभूमिवासिने ।।

ओं पीठशक्तिपीठकोपपादिने ।
ओं सिद्धमन्त्रयोगिने वियोगिने ।।

ओं सर्वद्वन्द्वचतुर्नयादिकारिणे ।
ओं सर्वतीर्थतीर्थताविधायिने ।।६०।।

ओं साङ्गवेदतद्विचारचारवे ।
ओं षट्पदार्थषोडशार्थवादिने ।।

ओं सांख्ययोगपाञ्चरात्रपञ्चिने ।
ओं धातृविष्णुशर्वकादिरूपिणे ।।

ओं धातृविष्णु प्रमुखात्मरूपिणे ।
ओं भोग्यदाय भोग्यभोगरूपिणे ।।

ओं पारगाय पारणाय मन्त्रिणे ।
ओं पारमार्थपार्थिवस्वरूपिणे ।।

ओं सर्वमण्डलाधिपत्यशालिने ।
ओं सर्वशक्तिवासनानिवासिने ।।७०।।

ओं सर्वतन्त्रवासनारसात्मने ।
ओं सर्वमन्त्रदेवतानियोगिने ।।

ओं स्वस्थिताय नित्यकर्ममालिने ।
ओं कालकल्पकल्पिने सुतल्पिने ।।

ओं भक्तकाय सौख्यदाय शम्भवे ।
ओं भूर्भुवःस्वरात्मलक्ष्यलक्षिणे ।।

ओं शून्यभावशान्तरूपधारिणे ।
ओं सर्वभावशुद्धबुद्धिहेतवे ।।

ओं सर्वसिद्धिदायिने सुमायिने ।
ओं भक्तिमात्रसंस्तुताय शूलिने ।।८०।।

ओं नमः शिवाय भास्वते ।
ओं भर्ग ते ।
ओं शर्व ते ।
ओं गर्व ते । ओं खर्व ते । ओं पर्व ते । ओं रुद्र ते । ओं भीम ते । ओं विष्णवे । ओं जिष्णवे ।।९०।।

ओं धन्विने । ओं खड्गिने । ओं चर्मिणे । ओं वर्मिणे । ओं कर्मिणे । ओं धर्मिणे । ओं भामिने । ओं कामिने । ओं योगिने । ओं

ॐ० तिष्ठते । ॐ० गच्छते । ॐ० हेतवे ।
ॐ० सेतवे । ॐ० सर्वतः । ॐ० सर्वशः ।
ॐ० सर्वदा । ॐ० सर्वथः । ।१०८॥

भव शर्व रुद्रहर शंकर भूतपते गिरिश गिरीशभर्ग शशिशेखर नीलगल ।
त्रिनयन वामदेव गिरिजाधव माररिपो जयजय देवदेव भगवन्भवतेऽस्तु नमः ॥

एतामष्टोत्तरशतनमस्कारसंस्कारपूतां भूतार्थव्याहृतिनुतिमुदाहृत्य मृत्युञ्जयस्य ।
कश्चिद्विद्वान्यदिह कुशलं सञ्चिनोति स्म किञ्चित्तेनान्येषां भवति पठतामीप्सितार्थस्य सिद्धिः ॥

इति व्यासोक्तनिर्वाणस्तुतिः ॥

—o—

अथ रावणकृतदीनाक्रन्दाख्यशिवक्षमापणम् ॥

ॐ गौरीश्वराय भुवनत्रयकारणाय भक्तप्रियाय भवभीतिभिदे भवाय ।
शर्वाय दुःखशमनाय वृषध्वजाय रुद्राय कालदहनाय नमः शिवाय ॥१॥

सर्वेश्वरत्वे सति भस्मशायिने ह्युमापतित्वे सति चोर्ध्वरेतसे ।
वित्तेशभृत्ये सति चर्मवाससे निवृत्तरागाय नमस्तपस्विने ॥२॥

ॐकारेण विहीनस्य नित्यमुद्विगन्चेतसः ।
तापत्रयाग्नितप्तस्य त्राणं कुरु महेश्वर ॥३॥

कायपोषणसक्तस्य रोगशोकाकुलस्य च ।
भवार्णवनिमग्नस्य त्राणं० ॥४॥

मदनोरगदष्टस्य क्रोधाग्निज्वलितस्य च ।
लोभमोहादिसक्तस्य त्राणं० ॥५॥

तृष्णाशृङ्खलया नाथ बद्धस्य भवपञ्जरे ।
कृपार्द्रदीनचित्तस्य त्राणं० ॥६॥

भटैर्नानाविधैर्घोरैर्यमस्याज्ञाविधायकैः ।
तां दिशं नीयमानस्य त्राणं० ॥७॥

दुष्टस्य नष्टचितस्य श्रेष्ठमार्गोज्जितस्य च ।
अनाथस्थ जगतनाथ त्राणं ॥८॥

संसारपाशदृढबन्धनपीडितस्य मोहान्धकारविषमेषु निपातितस्य ।
कार्मोदितस्य भयरागखलीकृतस्य दीनस्य मे कुरु दयां परलोकनाथ ॥९॥

दीनोस्मि मन्दधिषणोस्मि निराश्रयोस्मि दासोस्मि साधुजनतापरिवर्जितोस्मि ।
दुष्टोस्मि दुर्भगतमोस्मि गतत्रपोस्मि धर्मोज्झितोस्मि विकलोस्मि कलङ्कितोस्मि ॥१०॥
भीतोस्मि भङ्गुरतमोस्मि भयानकोस्मि शंकाशतव्यतिकराकुलचेतनोस्मि ।

रागादिदोषनिकरैर्मुखरीकृतोस्मि सत्यादिशोचनियमैः परिवर्जितोस्मि ॥११॥

जन्माटवीभ्रमणमारुतखेदितोस्मि नित्यामयोस्म्यऽशरणोस्म्यऽसमञ्जसोस्मि ।
आशानिरङ्कुशपिशाचिकयार्दितोस्मि हास्योस्मि हा पशुपते शरणागतोस्मि ॥१२॥

हा हतोस्मि विनष्टोस्मि दष्टोस्मि चपलेन्द्रियैः ।
भवार्णवनिमग्नोस्मि किं त्रातुं मम नार्हसि ॥१३॥

यदि नास्मि महापापी यदि नास्मि भयातुरः ।
यदि नेन्द्रियसंसक्तस्तत्कोर्थः शरणे मम ॥१४॥

आर्तो मत्सदृशो नान्यस्त्वत्तो नान्यः कृपापरः ।
तुल्य एवावयोर्योगः कथं नाथ न पाहि माम् ॥१५॥

आकर्णयाऽशु कृपणस्य वचांसि सम्यक् लब्धोसि नाथ बहुभिर्ननु जन्मवृन्दैः ।
अद्य प्रभो यदि दयां कुरुषे न मे त्वं त्वत्तः परं कथय कं शरणं व्रजामि ॥१६॥

द्वेष्योहं सर्वजन्तूनां बन्धूनां च विशेषतः ।
सुहृद्वर्गस्य सर्वस्य किमन्यत्कथयामि ते ॥१७॥

मातापितृविहीनस्य दुःखशोकातुरस्य च ।
आशापाशनिबद्धस्य रागद्वेषयुतस्य च ॥१८॥

देवदेव जगन्नाथ शरणागतवत्सल ।
नान्यस्त्रातास्ति मे कश्चित्त्वदृते परमेश्वर ।।१९।।

भीतोस्मि कालवशगोस्मि निराश्रयोस्मि खिन्नोस्मि दुःख-
जलधौ पतितोस्मि शम्भो ।
आर्त्तोस्मि मोहपटलेन समावृतोस्मि त्वां चन्द्रचूड शरणं
समुपागतोस्मि ।।२०।।

आशिखान्तं निमग्नोस्मि दुस्तरे भवकर्दमे ।
प्रसीद कृपया शम्भो पादाग्रेणोद्धरस्व माम् ।।२१।।

श्रुत्वा मे भवभीतस्य भगवन्करुणा गिरः ।
तथा कुरु यथा भूयो न बाधन्ते भवापदः ।।२२।।

समयशतविलुप्तं भक्तिहीनं कुचैलं मलिनवसनगात्रं निर्दयं
पापशीलम् ।
रविजभ्रुकुटिभीतं रोगिणं प्राप्तदुखं खलजनपरिभूतं रक्ष
मां सर्वशक्त ।।२३।।

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा ।
भगवंस्त्वां प्रपन्नोसिम रक्ष मां शरणागतम् ।।२४।।

जातस्य जायमानस्य गर्भस्थस्यापि देहिन: ।
माभूत्तत्र कुले जन्म यत्र शम्भुर्न दैवतम् ।।२४।।

शङ्करस्य च ये भक्ताः शान्तास्तग्दतमानसाः ।
तेषां दासस्य दासोहं भूयां जन्मनि जन्मनि ।।२६।।

नमस्कारादिसंयुक्तं शिवइत्यक्षरद्वयम् ।
जिह्वाग्रे वर्तते यस्य सफलं तस्य जीवितम ।।२७।।

यत्कृतं यत्करिष्यामि तत्सर्वं न मया कृतम् ।
त्वया कृतं तु फलभुक्त्वमेव परवेश्वर ॥२८॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यदगतम् ।
मया दासेन विज्ञप्तं क्षम्यतां परमेश्वर ॥२९॥

इति श्रीरावणकृता दीनाक्रन्दनस्तुतिः ॥

—o—

महालक्ष्म्येषृकम्

इन्द्र उवाच

नमस्तेऽस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।
शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥१॥

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।
सर्वपापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥२॥

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।
सर्वदुःखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥३॥

सिद्धिबुद्धि प्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि ।
मन्त्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥४॥

आद्यन्तरहिते देवि आद्यशक्तिमहेश्वरि ।
योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ॥५॥

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।
महापापहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ।।६।।

पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्मस्वरूपिणि ।
परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नोऽस्तु ते ।।७।।

श्वेताम्बरधरे देवि नानालङ्कारभूषिते ।
जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।८।।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ।।९।।

एककाले पठेन्नित्यं महापापविनाशनम् ।
द्विकालं यः पठेन्नित्यं धनधान्यसमन्वितः ।।१०।।

त्रिकालं यः पठेन्नित्यं महाशत्रुविनाशनम् ।
महालक्ष्मीर्भवेन्नित्यं प्रसन्ना वरदा शुभा ।।११।।

इतीन्द्रकृतं महालक्ष्म्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

—o—

सूर्याष्टम्

आदिदेव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर ।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तु ते ।।१।।

सप्ताश्वरथमारूढं प्रचण्डं कश्यपात्मजम् ।
श्वेतपद्मधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।२।।

लोहितं रथमारूढं सर्वलोकपितामहम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाभ्यहम् ।।३।।

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।४।।

बृंहितं तेजःपुञ्जं च वायुमाकाशमेव च ।
प्रभुं च सर्वलोकानां तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।५।।

बन्धूकपुष्पसङ्काशं हारकुण्डलभूषितम् ।
एकचक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।।६।।

तं सूर्यं जगत्कर्तारं महातेजःपदीपनम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्हम् ।।७।।

तं सूर्यं जगतां नाथं ज्ञानविज्ञानमोक्षदम् ।
महापापहरं देवं तं सूर्यं प्रणमास्यहम् ।।८।।

इति श्रीशिवप्रोक्तं सूर्याष्टकं सम्पूर्णम् ।

कुछ अन्य श्वलोक

महागायत्री

मूलाधाराद वुत वहकला मिश्रित भूंभवस्व-
ब्रहमस्थानात परम गहनात तत्सवितुर्वरेणयम ।
भर्गों देवा शशि कलमयी घीमहीत्येकरूपं
धियो योन परम अमृतं चोद यात्न परं तत ।। (१)

मुक्ता विद्रुम हेम नील धवल च्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्ताम इन्दु निबद्ध रत्न मुकटां तत्वात्म वर्णात्मिकाम।
गायत्रीं वरदा भयां कुशा करां शूलं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रम अथार विन्द युगलं हस्तैर्वहन्तो भजे ॥

—०—

वितस्ता भगवती

तीर्थैश्च कोटिगुणितैश्च सहस्र सङ्ख्यै
गंगाप्रयाग गयनैमिष पुष्कराध्यैः ।
नित्यं प्रयाति परमामृततोय रूपा
या तां नमाम्य अघहरीं वरदां वितस्ताम ॥।१॥

ये त्वां प्रभात समये सततं स्मरन्ति
भाव प्रहृट्ष्टमनसो भवमोक्षलक्ष्मीम
तेषां सदा भवति निर्मल देह कान्ति
स्त्वां नौमि पाप शमनी वरदां वितस्ताम ॥२॥

—०—

श्री शारिका भगवती

शान्ति नयस्याशु जनस्य पापं
रिकतत्वमर्थेन निरा करोषि ।
कायं निषञ्चस्यपि भाग्य पूरै
प्रगीयसेऽतः खलु शारिकात्वम ॥

श्री शंख चक्र मुसलाम्बुज युगम हस्तां
नागेन्द्र हार वलयाङ्कित कण्ठमालाम
सिन्दूर कुङ्कुम सहस्त्र मरीचि दोप्तां
श्री शारिकां त्रिनयंना हृदये स्मरामि ॥२॥

भत्कानां सिद्धि दात्री नलिनयुगकरा
श्वेत पदमासनस्था
लक्ष्मी रूपा त्रिनेत्रा हिमकर वदना सर्व दैत्येन्द्रहर्त्री
वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनै, सेविता या भवानी,
नौम्यहम नौम्यहम त्वां हरिहर प्रणतां शारिकां
नौमि-नौमि ॥३॥

दार्लाक कीटि ध्युतिम इन्दु चूडां, वरासिचक्राभयबाहय-
माध्याम ।
सिंहादिरूडां शिववामदेह लीनां भजे चेतसि
शारिकेशीम ॥४॥

ब्रहमाणं च पुस्दरं शिवहरी देवान्समस्तान्मुनीन
या दृषृया दयया विलोकयति सा देव्यमबिका पार्वती ।
चक्रस्था निजवोध भासित जगच्छान्तात्मिका र्संवगा
सान्द्रानन्दप्रदा परा भगवती पायात्सदा शारिका ।।५।।

श्री शरिके शरणये त्वं मय दासे दयां कुरू
ऋणां रोगं भयं शोंक रिपुन्ना शय सत्वरं ॥६॥

—:o:—

श्री महाराज्ञी

याद्वादशार्क परिमण्डित मूर्तिरेका
सिंहासनस्थितिमतीम मुरगैर्वृतां च
देवीमनक्ष गतिमीश्वरंता प्रपन्नां
तां नौमि भर्ग वपुषीं परमार्थराज्ञीम ।।१।।

शीतां शुबालार्क कृशानुनेत्रां,
चतुर्भुजामेन त्वकासनस्थाम ।
शंखाब्ज शूलासिधरां महेशीं
राज्ञीं भजेहं तुहिनाद्रिरूपाम ।।२।।

यत्पाद पंकज तलेऽमरमूर्व मौलि ।।१।।

यस्तेन्द्र नील मनिसन्ततयः पतन्ति ।।२।।

किंजल्कपानरवमुगध मधुव्रतत्वं, ।
राज्ञी सदा भगवती जननीव नोऽव्यात ।।३।।

स्मृतैवान्तर्गत पुंसां हरन्ती सकलं मलमं
जयत्येषां महाराज्ञी भक्तानां कामदायिनी ।।४।।

—:०:—

श्री ज्वालाभगवती

ज्वाला पर्वत संस्थितां त्रिनयनां पीठत्रयाधिष्ठिताम
ज्वालाडम्बर भूषितां सुवदनां नित्यामदृश्यां जनैः ।
षट चक्राम्बुज मध्यगां वरगदाम्भोजाभयान्बिभ्रतीं
चिद्रूपां सकलार्थ दीपन करीं ज्वालामुखीं नौम्यहम ।।१।।

सैन्यानां महिषासुरुस्य मृतिदां सिंहाधिरूढामुमां
नानाकार विशेष सौरव्यजननी देहान्तरै संस्थिताम ।
बाला मध्यमवृद्ध रूपरमणों श्री सुन्दरीं वैष्णवीं
स्त्री रूपेण जगद्विमोहन करीं ज्वालामुखीं नौम्यहम ।।२।।

संसारार्णव तारिणों रविशशि कोटी प्रभां सुप्रभां
पापा तङ्कनिवारिणों हरिहर ब्रह्मादिभि संस्तुताम ।।३।।

दारिद्रस्य विनाशिनों सुकृतिनां जाडयं हरन्तीं भृशम
अज्ञानान्धमते: कवित्वजननीं ज्वालामुखीं नौम्यहम ।।४।।

ज्वालामुखि महाज्वाले ज्वालापिंगल लोचेन
ज्वालातेजे महातेजे ज्वालामुखि नमोस्तुते ।।५।।

—:०:—

श्री महाकाली

खडगं चक्र गदेषुचाप परिघान्छूलं भुसणडीं शिर:
शंखं सन्दघतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम ।
यामस्तौत्स्वपितो हरौ कमलजो हन्तुं मधु कैटभं
नीलाशमद्द्युतिमाऽस्यपाद दशकां सेवे महाकालिकां ।।

—:०:—

महालक्ष्मी

अक्षसूक्षरशू गदेषु कुलिशान पद्मं धनुष्कुणिडकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम
शूलं पाशसुदर्शनौ च दधतीं हस्तै प्रवाल प्रभैः
सेवे सौरिभमर्दिनीम इह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम ।।

महासरस्वती

घंटाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायंक
हस्ताब्जैर्दधतीं धनान्त विलसच्छीतां शुतुल्यप्रभाम ।
गौरी देहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा
पूर्वोमत्र सरस्वतीमनु भजे शुम्भादिदैत्यादिनीम

—:०:—

पडनेयोगय कुछ अन्य श्वलोक

त्वदन्य: पाणिभ्याम भय वरदो दैवतगण:
स्त्वमेका नैवासि प्रकटित वराभीत्य भिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छासमधिकं
शरणये लोकानां तव हि चरणांवेव निपुणौ ॥१॥

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवह
स्थितिं स्वाधिष्ठाने हृदि मरूतमाकाशमुपरि ।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्वा कुलपथं
सहस्रारे पदे सह रहसि पत्या विहरसि ॥२॥

चतुर्भि: श्रीकण्ठै: शिवयुवतिभि: पंचभिरपि
प्रभिन्नाभि: शम्भोर्नवभिरिपि मूलप्रकृतिभि:
त्रयंशचत्वारिंशद वसुदल कलास्त्रत्रिवलय
त्रिरेखाभि: सार्धं तव शरनकोणा: परिणता: ॥३॥

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातः शिरसि दयया धेहि चरणौ ।
ययो पाध्यं पाथः पशुपति जटाजूट तटिनी
ययोर्लाक्षा लक्ष्मीररूण हरि चूडामणिरूचिः ।।४।।

उत्तप्त हेमरूचिरा रविचन्द्रवाहिण,
नेत्रां धनुः शरयुताङ्कुश काम पाशान ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिव शक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम ।।५।।

कृपापाङ्गालोकं वितर सहसा साधुचरिते
न ते युक्तोपेक्षा मयि शरणदीक्षामुपगते ।
न चेदिष्टं दध्यादनुपदमहो कल्पलतिका
विशेषः सामान्यैः कथमितरवल्ली परिकरैः ।।६।।

सिंहात उत्थाप कोपात धर धर धर कृत, धावमाना
भवानी । दैत्यानां दिव्य शस्त्रै त्रह त्रह त्रह कृत,
त्रोटयन्ती शरानाम ।
तेषां रक्तं पिबन्ती घ्रुट घ्रुट घ्रुट कृत, पूरयन्तो
पिशाचाम तृप्ता तृप्ता हसन्ती रव रव रव कृत,
शाम्भवी नः पुनातुं ।।७।।

—:०:—

क्षमा प्रार्थना

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहनिशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ।।१।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विर्सजनम ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥

मन्त्रहींन क्रियाहींन भक्तिहींन सुरेश्वरी ।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णें तदस्तु मे ॥३॥

अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोत्चरेत ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥

सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके ।
इदानीमनु कम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू ॥५॥

अज्ञानाद्विस्मृतेभ्रान्त्या यन्नयूनमधिकं कृतं ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥६॥

कामेश्वरी जगत्माता सच्चिदानन्द विग्रहे ।
गृहाणांर्चामिमां प्रोत्या प्रसीद परमेश्वरी ॥७॥

गुहयाति गुहय गोप्त्री त्वं गृहाणस्मस्कृतं जपम ।
सिद्धि भंवतु में देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥८॥

—:०:—

प्रणाम करके पडना

यदक्षर पद भ्रष्टं मात्राहींन च यदगतम ।
त्वयां तत्क्षम्यतां देवीः कृपया परमेश्वरि ॥१॥
मत्समः पातकी नास्ति पापहनो त्वतसमा न हि ।
एबं ज्ञात्वा महादेवी यथा योग्य तथा कुरु ॥।२॥

अथ सप्त श्वलोकी गीता

ओमित्यकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन ।
य: प्रयति त्यजन्देह स याति परमां गतिम ।।१।।

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या,
जगत्प्रहृष्य त्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संघा ।।२।।

सर्वत: पाणिपादं तत्सर्वतो क्षिशिरोमुखम ।
सर्वत: श्रुतिमल्लोके सर्वमा वृत्य तिष्ठति ।।३।।

कविं पुराणम नुशा सितारम-णोरणीयांसमनु स्मरेद्दय: ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादिव्य वर्णं तमस: परस्तात ।।४।।

ऊर्ध्वमूलमध: शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित ।।४।।

सर्वस्य चांह हृदि सन्निविष्टो,
मत: स्मृतिरज्ञानमपोहनंच ।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेध्यो,
वेदान्त कृद्वेद विदेव चाहम ।।६।।

मन्मना भव मदभक्तो मध्याजी मां नमस्कुरू ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवात्मानं मत्परायण: ।।७।।

—:०:—

शान्ति पाठ

ॐ शन्नो मित्र: । शं वरुण: । शन्नो भवत्वर्यमा ।
शन्नो इन्द्रो बृहस्पति: । शां नो विष्णुरुरुक्रम: ।
नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि ।
सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तदवक्तारमवतु ।
अवतु माम । अवतु वक्तारम ।
ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति: ।।

ॐ सहनाववतु । सह नौ भुनक्त । सहवीर्य
करवावहै । तेजस्वि नावधीतमस्तु । मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ।।

अस्तौ मां सदगमय: तमसो मां ज्योर्तिगमय: ।
मृर्त्योमाम अमृतमगमय: ।
ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ।।

पूर्णमद: पूर्णमदिं पूणात्पूणमुर्व्यंत
पूर्णस्य पूणमादाय पूर्णमेवावशिषति ।
ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ॐ शान्ति: ।।

—:०:—

अथ लघुस्तवः प्रथमः

ओं नमः त्रिपुर सुन्देर्यं

ऐन्द्रस्येव शरासनस्य दधती मध्ये ललाटं प्रभां
शौक्लीं कान्तिमनुष्ण गोरिव शिरस्यातन्वती सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदिद्युतिरिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
छिन्द्यान्नः सहसा पदैस्त्रिभिरघं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी।१।

या मात्रा त्रपुसीलतातनुलसत्तन्तूत्थिति स्पर्धिनो
वाग्बीजे प्रथमे स्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम्।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजननं, व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वेत्थं न पुनः स्पृशन्ति जननीगर्भेऽर्भकत्वं नराः॥२॥

दृष्ट्वा संभ्रमकारि वस्तुसहसा, ऐऐ इति व्याहृतम्
येनाऽकूतवशादऽपीह वरदे ! बिन्दुं विनाप्यक्षरम्।
तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा, जाते तवानुग्रहे
वाचःसूक्तिसुधारसद्रवमुचो, निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात्॥६॥

यन्नित्ये तव कामराजमपरं मन्त्राक्षरं निष्कलम्
तत्सारस्वतमित्यवैति विरलः, कश्चिद्बुधश्चेद्भुवि।
आख्यानं प्रतिपर्व सत्यतपसो, यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पद प्रणयितां नीत्वोच्चरन्ति स्फुटम्॥४॥

यत्सद्यो वचसां प्रवृत्तिकरणे, दृष्टप्रभावं बुधैः
तार्तीयीकमहं नमामि मनसा, त्वद्बीजमिन्दु प्रभम्।
अस्त्वौर्वोपि सरस्वतीमऽनुगतो, जाडयाम्बु विच्छत्तये
गो शब्दो गिरि वर्तते सनियतं योगं विना सिद्धिदः॥५॥

एकैकं तवदेवि बीजमनघं, सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं,
कूटस्थं यदि वा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात् ।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं,
जप्तं वा सफली करोति सहसा तं तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

वामे पुस्तक धारिणीम ऽभयदां साक्षस्त्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदानपेशलकरां कर्पूर कुन्दो ज्ज्वलाम् ।
उज्जृम्भाम्बुजपत्रकान्तनयन, स्निग्ध प्रभा लोकिनीं
येत्वामऽम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

ये त्वां पाण्डुर पुण्डरीक पटल, स्पष्टाभिराम प्रभां
सिञ्चन्तीमऽमृतद्रवैरिव शिरो ध्यायन्ति मूर्ध्नि स्थिताम् ।
अश्रान्तं विकट स्फुटाक्षर पदा निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात्
तेषां भारति ! भारती सुरसरित्कल्लोललोलोर्मिवत् ॥८॥

ये सिन्दूर पराग पुञ्जपिहितां त्वत्तेजसा द्यामिमाम्
उर्वी चापि विलीन यावकरस प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमऽप्यऽनन्य मनस स्तेषामऽनङ्गज्वर
काल्न्तास्त्रस्तकुरङ्ग शावक दृशोवश्या भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गदधरामाऽ ऽबद्धकाञ्ची स्त्रजं
ये त्वां चेतसि तद्गतेक्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमादऽहरहः स्फारी भवन्त्य श्चिरं
माद्यत्कुञ्जर कर्णताल तरलः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

आभंटचया शशिखण्ड मण्डित जटाजूटां नृमुण्ड स्त्रजं
बन्धूक प्रसवारुणाम्बरधरां प्रेतासना ध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयनामाऽऽपीन तुङ्गस्तनीं
मध्ये निम्नवलि त्रयाङ्कित तनुं त्वद्रूपसंवित्तये ॥११॥

जातोऽप्यऽल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्ति पदवीं लब्ध्वा प्रतापोन्नतः ।
यद्विद्याधर वृन्दवन्दित पदः श्रीवत्सराजोऽभवत्
देवि ! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोऽयं प्रसादोदयः ।।१२।।

चण्डि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चन विधौ, बिल्वीदलोल्लुण्ठन
त्रुटयत्कण्टक कोटिभिः परिचयं, येषां न जग्मुः कराः ।
ते दण्डाङ्कुश चक्र चाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्याङ्कितैः
जायन्ते पृथिवीभुजः कथमिवा-म्भोज प्रभैः पाणिभिः ।।१३।।

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे, क्षीराज्यमध्वासवैः
त्वां देवि ! त्रिपुरे ! पराऽपरमयीं, सन्तर्प्य पूजाविधौ ।
यां यां प्रार्थयते मनःस्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा, विघ्नैरविघ्नी कृतः ।।१४।।

शब्दानां जननी तवमत्र भुवने वाग्वादिनी त्युच्यसे
त्वत्तः केशव वासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम् ।
लीयन्ते खलु यत्र कल्पविरमे, ब्रह्मादयस्तेप्यमी
सा त्वं काचिदऽचिन्त्यरूपमहिमा शक्तिः परा गीयसे ।।१५।।

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां, शक्तित्रयं त्रिस्वरा
स्त्रैलोक्यं त्रिपदी त्रिपुष्करमथो, त्रिब्रह्म वर्णास्त्रयः ।
यत्किञ्चज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरीति नाम भगवत्य्न्वेति ते तत्त्वतः ।।१६।।

लक्ष्मीं राजकुले जयां रणभुवि क्षेमङ्करी मध्वनि
क्रव्याद द्विप सर्प भाजि शवरीं कान्तार दुर्गे गिरौ ।
भूत प्रेत पिशाच जम्बुक भये स्मृत्वा महाभैरवीं
व्यामोहे त्रिपुरां तरन्ति विपदस्तारां च तोयप्लवे ।।१७।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना, वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी, माता कुमारीत्यसि ।।१८।।

आई पल्लवितैः परस्परयुतै, द्वित्रि क्रमाद्यक्षरैः
काद्यैः क्षान्तगतैः स्वरादिभिरथो क्षान्तैश्च तैः सस्वरैः।
नामानि त्रिपुरे ! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरव पत्नि विंशति सहस्रेभ्यः परेभ्यो नमः ।।१९।।

वोद्धव्या निपुणं बुधैः स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तत्गतं
भारत्या स्त्रिपुरेत्यनन्य मनसो, यत्राद्यवृते स्फुटम् ।
एक द्वित्रिपद क्रमेण कथितस्तत्पाद संख्याक्षरैः
मन्त्रोद्धार विधि विशेष सहितः सत्संप्रदायान्वितः ।।२०।।

सावद्य निरवद्यमस्तु यदि वा, किं वा नया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो, यस्यास्ति भक्ति स्त्वयि ।
सञ्चिन्त्यापि लघुत्वमात्मनि दृढं, सञ्जायमानं हठात्
त्वभ्दक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि
स्फुटम् ।।२१।।

॥ चर्चास्तवः

ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्यै अथ द्वतीयः

आनन्दसुन्दरपुरन्दरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु-
मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ॥१॥

सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य-
सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्वकुमदप्रकरावबोध-
पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननि प्रणामाः ॥२॥

देवि ! स्तुतिव्यतिकरे कृतबुद्धयस्ते
वाचस्पतिप्रभृतयोपि जडीभवन्ति ।
तस्मान्निसर्गजडिमा कतमोहमऽत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुरतापनपत्नि ! कर्तुम् ॥३॥

मातस्तथापि भवतीं भवतीव्रताप-
विच्छित्तये स्तुतिमहार्णवकर्णधारः ।
स्तोतुं भवानि स भवच्चरणारविन्द-
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥४॥

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि ।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥५॥

यस्मिन्मनागऽपि नवाम्बुजपत्रगौरि !
गौरि ! प्रसादमधुरां दृशमाऽदधासि ।
तस्मिन्निरन्तरमनङ्गशरावकीर्ण-
सीमन्तिनोनयनसन्ततयः पतन्ति ॥६॥

पृथ्वीभुजोऽप्युदयनप्रवरस्य तस्य
विद्याधरप्रणतिचुम्बितपादपीठ : ।
यच्चक्रवर्तिपदवीप्रणयः स एष
त्वत्पादङ्कजरजःकणजः प्रसादः ॥७॥

कल्पद्रुमप्रसवकल्पितचित्रपूजा-
मुद्दीपितप्रियतमामदरक्तगीतिम् ।
नित्यं भवानि ! भवतीमुपवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैलगुहागृहेषु ॥८॥

लक्ष्मीवशीकरणकर्मणि कामिनीना-
माऽकर्षणव्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्रः ।
नीरन्ध्रमोहतिमिरच्छिदुरप्रदीपो
देवि ! त्वदऽङ्घ्रिजनितो जयति प्रसादः ॥९॥

देवि ! त्वदऽङ्घ्रिनखरत्नभुवो मयूरवाः
प्रत्यग्रमौक्तिकरुचो मुदमुद्वहन्ति ।
सेवानतिव्यतिकरे सुरसुन्दरीणां
सीमन्तसीम्मि कुसुमस्तवकायितं यैः ॥१०॥

मूर्ध्निर्स्फुरत्तुहिनदीधितिदीप्तिदोप्तं
मध्ये ललाटममरायुधरश्मिचित्रम् ।

हृच्चक्रचुम्बि हुतभुक्कणिकानुरूपं
ज्योतिर्यदेतदिदमम्ब ! तव स्वरूपम् ॥११॥

रूपं तव स्फुरितचन्द्रमरीचिगौर-
माऽलोकते शिरसि वागधिदैवतं यः।
निःसीमसूक्तिरचनामृतनिर्भरस्य
तस्य प्रसादमधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥१२॥

सिन्दूरपांसुपटलच्छुरितामिव द्यां
त्वत्तेजसा जतुरसस्नपितामिवोर्वीम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे ! विहाय
व्रीडां मृडानि ! सुदृशस्तमनुद्रवन्ति ॥१३॥

मातर्मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारसप्रसरतन्तुनिभं भवत्याः।
ध्यायन्त्यनन्यमनसस्तमनङ्गतप्ताः
प्रद्युम्नसीम्निसुभगत्वगुणं तरुण्यः ॥१४॥

योऽयं चकास्ति गगनार्णवरन्तमिन्दु-
र्योऽयं सुराऽसुरगुरुः पुरुषः पुराणः।
यद्वाममर्धमिदमऽन्धकसूदनस्य
देवि ! त्वमेव तदिति प्रतिपादयन्ति ॥१५॥

इच्छानुरूपमऽनुरूपगुणप्रकर्षं
सङ्कर्षणि ! त्वमनुसृत्य यदा बिभर्षि ।
जायेत स त्रिभुवनैक गुरुस्तदानीं
देवः शिवोऽपि भुवनत्रयसूत्रधारः ॥१६॥

रुद्राणि ! विद्रुममयीं प्रतिमामिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरुणकान्तिमऽनन्यरूपाम् ।
तानेत्य पक्ष्मलदृशः प्रसभं भजन्ते
कण्ठावसक्तमृदुबाहुलतास्तरुण्यः ॥१७॥

त्वद्रूपमुल्लसितदाड़िमपुष्परक्त-
मुद्भावयेन्मदनदैवतमंक्षरं यः ।
तं रूपहीनमपि मन्मथनिर्विशेष-
मालोकयन्त्युरुनितम्बभरास्तरुण्यः ॥१८॥

ध्याताऽसि हैमवति ! येन हिमांशुरश्मि-
मालाऽमलद्युतिरऽकलमषमानसेन ।
तस्याऽविलम्बमऽनवद्यमऽनल्पकल्प-
मल्पैर्दिनैः सृजसि सुन्दरि ! वाग्विलासम् ॥१९॥

आधारमारुतनिरोधवशेन येषां
सिन्दूररंजितसरोजगुणानुकारि ।
तीव्रं हृदि स्फुरति देवि ! वपुस्त्वदीयं
ध्यायन्ति तानिह समीहितसिद्धसाध्याः ॥२०॥

त्वामैन्दवीमिव कलामनुभालदेश-
मुद्भासिताम्बरतलामऽवलोकयन्तः ।
सद्यो भवानि ! सुधियः कवयो भवन्ति
त्वं भावनाहितधियां कुल कामधेनुः ॥२१॥

त्वां व्यापिनीति सुमना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।

त्वां मालिनीति ललितेत्यपराजितेति
देवि ! स्तुवन्ति विजयेति जयेत्युमेति ॥२२॥

ये चिन्तयन्त्यरुणमण्डलमध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब ! नवयावकपङ्कपिङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसमायुधबाणभिन्न-
वक्षःस्थला मृगदृशो वशगा भवन्ति ॥२३॥

उतप्तहेमरुचिरे त्रिपुरे ! पुनीहि
चेतश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि ।
कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडास्त्रुटन्तु ॥२४॥

शर्वाणि ! सर्वजनवन्दितपादपद्म !
पद्मच्छदच्छविविडम्बितनेत्रलक्ष्मि !
निष्पापमूर्तिजनमानसराजहंसि !
हंसि त्वमापदमऽनेकविधां जनस्य ॥२५॥

त्वत्पादपङ्कजरजः प्रणिपातपूतैः
पुण्यैरनल्पमतिभिः कृतिभिः कवीन्द्रैः ।
क्षीरक्षपाकरदुकूलहिमावदाता
कैरप्यवापि भुवनत्रितयेऽपि कीर्तिः ॥२६॥

त्वद्रूपैकननिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्त्वद्गुण-
ग्रामाकर्णनरागिता श्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिश्चेतसि ।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि ! मा शाम्यतु ॥२७॥

उद्दामकामपरमार्थसरोजषण्ड-
चण्डद्युतिद्युतिमुपासितषट्प्रकाराम् ।
मोहद्विपेन्द्रकदनोद्यतबोधसिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥२८॥

गणेशवटुकस्तुता रतिसहायकामान्विता
स्मरारिवरविष्टरा कुसुमबाणबाणैर्युता ।
अनङ्गकुसुमादिभिः परिवृता च सिद्धैस्त्रिभिः
कदम्बवनमध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु नः ॥२९॥

यः स्तोत्रमेतदनुवासरमीश्वरायाः
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजभिरीड्यतेऽसौ
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥३०॥

ब्रह्मेन्द्ररुद्रहरिचन्द्रसहस्ररश्मि-
स्कन्दद्विपाननहुताशनवन्दितायै ।
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात-
रन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते ॥३१॥

ॐ

अथ तृतीयो घटस्तवः

ओं नमः त्रिपुरसुन्दर्यै

देवि ! त्र्यम्बकपत्नि ! पार्वति ! सति ! त्रैलोक्यमातः !
शिव !

शर्वाणि ! त्रिपुरे ! मृडानि ! वरदे ! रूद्राणि !
कात्यायिनि !
भीमे ! भैरवि ! चण्डि ! शर्वरि ! कले ! कालक्षये !
शूलिनि !
त्वत्पादप्रणतानऽनन्यमनसः पर्याकुलान्पाहि नः ॥१॥

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्तमूर्च्छा इव
प्राप्तप्रौढमदा इवाति विरग्रस्ता इवार्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराजतनयां धन्यास्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधिविवृद्धरागमनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥

देवि ! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृतस्तं नम-
न्त्याजन्मस्फुरदङ्घ्रिपीठविलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः ।
यस्त्वामर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैर्यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्ययाति तं स्मरार्तिधुरा ध्यायन्ति वामभ्रुवः ।३।

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे ! हृदि त्वां
लावणययौवनधनैरपि विप्रयुक्ताः ।
ते विस्फुरन्ति ललितायतलोचनानां
चितैकभित्तिलिखितप्रतिमाः पुमांसः ॥४॥

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्गमङ्गैर्निजैः
किं वामुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये ।
तस्येत्थं विवशो विकल्पघटनाकूतेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि ! हृदये यस्य त्वमावर्तसे ॥५॥

विश्वव्यापिनि यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि ! त्वय्येव तथ्यस्थितिः ।

इत्थं सत्यपि शक्नुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानऽपि न क्षिणोषि च रुषु तद्देवि ! चित्रं महत् ।६।

इन्दोर्मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां महोहारिणीं
पाण्डूत्फुल्लसरोरुहासनगतां स्निग्धप्रदीपच्छविम् ।
वर्षन्तीममृतं भवानि ! भगवतीं ध्यायन्ति ये देहिन-
स्ते निर्मुक्तरूजो भवन्ति विपदः प्रोज्झन्ति तान्दूरतः ॥७॥

पूर्णेन्दोः शकलैरिवातिबहलैः पीयूषपूरैरिव
क्षीराब्धेर्लहरीभरैरिव सुधापङ्कस्य पिण्डैरिव ।
प्रालेयैरिव निर्मितं तव वपुर्ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चित्तान्तर्निहतार्तितापविपदस्ते सम्पदं बिभ्रति ॥८॥

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रन्थिपञ्चकभिदं तरूणार्कशोणाम् ।
रागार्णवे बहलरागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद्दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः ॥६॥

लाक्षारसस्नपितपङ्कजतन्तुतन्वी-
मऽन्तः स्मरत्यऽनुदिनं भवतीं भवानि ।
यस्तं स्मरप्रतिममऽप्रतिमस्वरूपा
नेत्रोत्पलैर्मृगदृशो भृशमऽर्चयन्ति ॥१०॥

स्तुमस्त्वां वाचमऽव्यक्तां
हिमकुन्देन्दुरोचिषम् ।
कदम्बमालां बिभ्राणा-
माऽऽपादतललम्बिनीम् ॥११॥

मूर्ध्नीन्दोः सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डुत्विषं
वर्षन्तीमऽमृतं सरोरुहभुवो वक्त्रेऽपिरन्ध्रेऽपिच ।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाऽतिप्रसन्नाऽपिच
त्वामेव स्मरतां स्मरारिदयिते ! वाक् सर्वतो
वल्गति ॥१२॥

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन्व्याधीञ्छमयति सुखानि प्रतनुते ।
हठादऽन्तदुःखं दलयति पिनष्टीष्टविरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥१३॥

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्तय-
त्यन्वेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्यर्चति ।
यश्च त्र्यम्बकवल्लभे ! तव गुणानाऽकर्णयत्यादरा-
त्तस्य श्रीर्न गृहादपैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥१४॥

किं किं दुःखं दनुजदलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
कां का कीर्तिः कुलकमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ॥१५॥

ये देवि ! दुर्धरकृतान्तमुखान्तरस्था
ये कालि ! कालघनपाशनितान्त बद्धाः ।
ये चण्डि ! चण्डगुरुकल्मषसिन्धुमग्ना-
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

लक्ष्मीवशीकरणचूर्णसहोदराणि
त्वत्पादपङ्कजरजांसि चिरं जयन्ति ।

यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पंति दैवलखितानि दुरक्षराणि ।।१७।।

रे मूढाः ! किमयं वृथैव तपसा कायः परिल्किश्यते
यक्षैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते गृहाः ।
भक्तिश्चेदऽविनाशिनि भगवतीपादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्रसुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति ।।१८।।

याचे न कंचन न वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्तदैन्यः ।
श्क्ष्णं वसे मधुरमद्मि भजे वरस्त्री-
देंवी हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनुः ।।१९।।

शब्दब्रह्ममयि ! स्वच्छे देवि त्रिपुरसुन्दरि ! ।
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि ।।२०।।

नन्दन्तु साधकाः सर्वे विनश्यन्तु विदूषकाः ।
अवस्था शाम्भवी मे ऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरुः सदा ।।२१।।

दर्शनात्पापशमनी जपान्मृत्युविनाशिनी ।
पूजिता दुःखदौर्भाग्यहरा त्रिपुरसुन्दरी ।।२२।।

नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम् ।
भवानीं भधसन्तापनिर्वापणसुधानदीम् ।।२३।।

मन्त्रहीनंक्रियाहीनं विधिहीनं च यग्दतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि ! कृपया परमेश्वरि ! ।।२४।।

अथ पञ्चस्तव्यामऽमस्तव चतुर्थः

उों यामाऽऽमनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येतियांक्षुतिरहस्यविदो वदन्ति ।

तामऽर्धपल्लवितशङ्कररूपमुद्रां
देवीमऽनन्यशरणः शरणं प्रपद्ये ॥१॥

अम्व ! स्तवेषु तव तावदऽकर्तृकाणि
कुण्ठीभवन्ति वचसामऽपि गुम्फनानि ।
डिम्बस्य मे स्तुतिरसाक्ऽसमञ्जसापि
वात्सल्यनिध्नहृदयां भवतीं धिनोति ॥२॥

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा-
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।
निःष्यन्दमानसुखबोधसुधास्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥३॥

आविर्भवत्पुलकसन्ततिभिः शरीरै-
र्निःष्यन्दमानसलिलैर्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गदपदाभिरुपासते ये
पादौ तवाम्ब ! हृदयेषु त एव धन्याः ॥४॥

वक्त्रं यदुद्यतमऽभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि ! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब ! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपोविशेषैः ॥५॥

मूलालवालकुहरादुदिता भवानि !
निर्भिद्य षट्सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसिध्रुवमण्डलेन्दु-
निःष्यन्दमानपरमामृततोयरूपा ॥६॥

दग्धं यदा मदनमेकमऽनेकधा ते
मुग्धः कटाक्षविधिरङ्कुरयांचकार ।
धत्ते तदाप्रभृति देवि ! ललाटनेत्रं
सत्यं ह्रियेव मुकलीकृतमिन्दुमौलिः ।।७।।

अज्ञातसम्भवमनाकलितान्ववायं
भिक्षुं कपालिनमवाससमद्वितीयम् ।
पूर्वं करग्रहणमङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं क एव बुबुधे गिरिराजकन्ये ।।८।।

चर्माम्बरं च शवभस्मविलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेतभूमौ ।
वेतालसंहतिपरिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे ! तव साहचर्यात् ।।९।।

कल्पोपसंहरणकेलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्डपरशोरपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मात-
र्लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ।।१०।।

जन्तोरपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेषपाशपटलच्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि ! दैशिककटाक्षसमाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भववेददीक्षा ।।११।।

मुक्ताविभूषणवती नवविद्रुमाभा
यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।

एकः स एव भुवनत्रयसुन्दरीणां
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥१२॥

भावयन्त्यमृतवाहिभिरंशुजालै-
राप्यायमानभुवनाममृतेश्वरीं त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरऽलङ्घनयां
ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि कालकक्ष्याम् ॥१३॥

यः स्फाटिकाक्षगुणपुस्तककुण्डिकाढ्यां
व्याख्यासमुद्यतकरां शरदिन्दुशुभ्राम् ।
पद्मासनां च हृदये भवतीमुपास्ते
मातः स विश्वकवितार्किकाचक्रवर्ती ॥१४॥

बर्हावतंस युतबर्बरकेशपाशां
गुञ्जावलीकृतघनस्तनहारशोभाम् ।
श्यामां प्रवालवदनां सुकुमारहस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥१५॥

अर्धेन किं नवलताललितेन मुग्धे !
क्रीतं विभोः परुषमर्धमिदं त्वयेति ।
आलीजनस्य परिहासवचांसि मन्ये
मन्दस्मितेन तव देवि ! जडी भवन्ति ॥१६॥

ब्रह्माण्ड बुद्बुदकदम्बकसंकुलोऽयं
मायोदधिर्विविधदुःखतरङ्गमालः ।
आश्चर्यमम्ब ! झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद्ध्यानसन्ततिमहावडवामुखाग्नौ ॥१७॥

दाक्षायणीति कुटिलेति गुहारणीति
कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमार्थतोऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननुकीव ॥१८॥

आनन्दलक्षणमनाहृनाग्नि देशे
नादात्मना परिणतं तव रूपमीशे ।
प्रत्यङ् मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नेत्रसलिलैः पुलकैश्च धन्याः ॥१६॥

त्वं चन्द्रिका शशिनि तिग्मरुचौ रुचिस्त्वं
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
निःसारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥२०॥

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं
सूते पयांसि यदहिर्धरणीं च धत्ते ।
यद्वाति वायुरनलो यदुदर्चिरास्ते
तत्सर्वमम्ब ! तव केवलमाज्ञयैव ॥२१॥

सङ्कोचमिच्छसि यदा गिरिजे ! तदानीं
वाक्तर्कयोस्त्वमसि भूमिरनामरूपा ।
यद्वा विकासमुपयासि यदा तदानीं
त्वन्नामरूपगणनाः सुकरीभवन्ति ॥२२॥

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भ्रूकिङ्करीकृतसरोजगृहासहस्राः ।

चिन्तामणिप्रचयकल्पितकेलिशैले
कल्पद्रुमोपवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे
संसारतापमखिलं दयया पशूनाम् ।
वैकर्तनोकिरणसंहतिरेव शक्ता
धर्मं निजं शमयितुं निजपेव वृष्ट्या ॥२४॥

शक्तिः शरीरमधिदैवतमन्तरात्मा
ज्ञानं क्रिया करणमासनजालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमावरणानि च त्वं
किं तन्न यद्भवसि देवि शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

भूमौ निवृत्तिरुदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्याऽनले मरुति शान्तिरतीतशान्तिः ।
व्योम्नीति याः किल कलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतरमम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाङ्गीकरोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ।
तावद्विकल्प जटिलाः कुटिलप्रकारा-
स्तर्कग्रहाः समायिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

यद्देवयानपितृयानविहारमेके
कृत्वा मनः करणमण्डलसार्वभौमम् ।
याने विवेश्य तव कारणञ्चकस्य
पर्वाणि पार्वति नयन्ति निजासनत्वम् ॥२८॥

स्थूलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
कस्याश्चनापि तव वैभवमम्ब यस्याः ।
पत्या गिरामपि न शक्यत एव वक्तुं
सासि स्तुता किल मयेति तितिक्षितव्यम् ॥२९॥

कालाग्निकोटिरुचिमम्ब षडध्वशुद्धा-
वाल्पावनेषु भवतीममृतौघवृष्टिम् ।
श्यामां घनस्तनतटां सकलीकृतौ च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

विद्यां परां कतिचिदम्बरमम्ब केचि-
दानन्दमेव कतिचित्कतिचिच्च मायाम् ।
त्वां विश्वमाहुरपरे वयमामनाम
साक्षादपारकरुणां गुरुमूर्तिमेव ॥३१॥

कुवलयदलनीलं बर्बरस्निग्धकेशं
पृथुतरकुचभाराक्रान्तकान्तावलग्नम् ।
किमिह बहुभिरुक्तैस्त्वत्स्वरूपं परं नः
सकलभुवनमातः सन्ततं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

ॐ

अथ सकलजननीस्तवः पञ्चमः

ओं अजानन्तो यान्ति क्षयमवशमन्योन्यकलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगन्मातर्जन्मज्वरभयतमः कौमुदि ! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥१॥

वचस्तर्कागम्यस्वरसपरमानन्दविभिव-
प्रभोधाकाराय द्युतितुलितनीलोत्पलरुचे ।
शिवस्याराध्याय स्तनभरविनम्राय सततं
नमो यस्मै कस्मैचन भवतु मुग्धाय सहसे ॥२॥

लुठद्गुञ्जाहारस्तनभरनमन्मध्यलतिका-
मुदञ्चद्धर्माम्भः कणगुणितनीलोत्पलरुचम् ।
शिवं पार्थत्राणप्रवणमृगयाकारगुणितं
शिवामन्वग्यान्तीं शवरहमन्वेमि शवरीम् ॥३॥

मिथः केशाकेशिप्रधननिधनास्तर्कघटना
बहुश्रद्धाभिक्तिप्रनयविषयाश्चाप्तविधयः ।
प्रसीद प्रत्यक्षीभव गिरिसुते ! देहि शरणं
निरुलम्बं चेतः परिलठति पारिप्वलमिदम ॥४॥

शुनां वा वह्नेर्वा खगपरिषदो वा यदशनं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न कश्चित्कलयति ।
अमुष्मिन्विश्वासं विजहिहि ममाह्लाय वपुषि
प्रपद्येथाश्चेतः सकलजननीमेव शरणम् ॥५॥

अनाद्यन्ताभेदप्रणयरसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासीर्यत्त्वं परिणयविधौ देवि ! गृहिणी ।
सवित्री भूतानामपि यदुदभूः शैलतनया
तदेतत्संसारप्रणयनमहानाटकसुखम ॥६॥

ब्रुवन्त्येके तत्वं भगवति ! सदन्ये विदुरस-
त्परे मातः ! प्राहुस्तव सदसदन्ये सुकवयः ।

परे नैतत्सर्वं समभिदधते देवि ! सुधिय-
स्तदेतत्त्वन्मायाविलसितमशेषं ननु शिवे ! ॥७॥

तडित्कोटिज्ज्योतिर्द्युतिदलितषड्ग्रन्थिगहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधावृष्टिवपुषा ।
किमप्यष्टात्रिंशत्किरणसकलीभूतमनिशं
भजे धाम श्यामं कुचभरनतं बर्बरकचम् ॥८॥

चतुष्पत्रान्तः षड्दलभगपुटान्तस्त्रिवलय-
स्फुरद्विद्युद्वह्निद्युमणिनियुताभद्युतियुते ।
षडश्रं भित्वादौ दशदलमथ द्वादशदलं
कलाश्रं च द्व्यश्रं गतवति ! नमस्ते गिरिसुते ॥९॥

कुलं केचित्प्राहुर्वपुरकुलमन्ये तव बुधाः
परे तत्सम्भेदं समभिदधते कौलमपरे ।
चतुर्णामप्येषामुपरि किमपि प्राहुरपरे
महामाये ! तत्वं तव कथममी निश्चिनुमहे ॥१०॥

षडध्वारण्यानीं प्रलयरविकोटिप्रतिरुचा
रुचा भस्मीकृत्य स्वपदकमलप्रह्वशिरसाम् ।
वितन्वानः शैवं किमपि वपुरिन्दीवररुचिः
कुचाभ्यामानम्रः शिवपुरुषकारो विजयते ॥११॥

प्रकाशानन्दाभ्यामविदितचरीं मध्यपदवीं
प्रविश्यैतद्द्वन्द्वं रविशशिसमाख्यं कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लयदहनभस्मीकृतकुलः
प्रसादत्ते जन्तुः शिवमकुलमम्ब ! प्रविशति ॥१२॥

प्रियङ्गु श्यामाङ्गीमरुणतरवासः किसलयां
समुन्मीलन्मुक्ताफलबहुलनेपथ्यकुसुमाम् ।
स्तनद्वन्द्वस्फारस्तबकनमितां कल्पलतिकां
सकृद्ध्यायन्तस्त्वां दधति शिवचिन्तामणिपदम् ॥१३॥

षडाधारावर्तैरपरिमितमन्त्रोर्पिपटलै-
श्चलन्मुद्राफेनैर्बहुविधलसद्दैवतझषैः ।
क्रमस्रोतोभिस्त्वं वहसि परनादामृतनदीं
भवानि ! प्रत्यग्रा शिवचिदमृताब्धिप्रणयिनि ॥१४॥

महीपाथोवोह्लश्वसनवियदात्मेन्दु रविभि-
र्वपुर्भिर्ग्रस्तांशैरपि तव कियानम्ब ! महिमा ।
अमून्यालोक्च्यन्ते भगवति ! न कुत्राप्यणुतरा-
मवस्थां प्राप्तानि त्वयि तु परमव्योमवपुषि ॥१५॥

मनुष्यास्तिर्यञ्चो मरुत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौमग्नं त्रिगुणलहरीकोटिलुठितम् ।
कटाक्षश्चेदत्र क्वचन तव मातः ! करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्दतनुताम् ॥१६॥

कलां प्रज्ञामाद्यां समयमनुभूतिं समरसां
गुरुं पारम्पर्यं विनयमुपदेशं शिवकथाम् ।
प्रमाणं निर्वाणं परममतिभूतिं परगुहां
विधिं विद्यामाहुः सकलजननीमेव मुनयः ॥१७॥

प्रलीने शब्दौघे तदनु विरते बिन्दुविभवे
ततस्तत्त्वे चाष्टध्वनिभिरनुपाधिन्युपरते ।

श्रिते शाक्ते पर्वण्यनुकलितचिन्मात्र गहनां
स्वसंविति योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ।।१८।।

परानन्दाकारां निरवधिशिवैश्वर्यवपुषं
निराकारज्ञान प्रकृतिमनवच्छिन्नकरुणाम् ।
सवित्रीं भूतानां निरतिशयधामास्पदपदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेवभजताम् ।।१९।।

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च पुरुषे
पुमांसं बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्यगहने ।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्दविभवे
महाव्योमाकारे ! त्वदनुभवशीलो विजयते ।।२०।।

विधे विद्ये वेद्ये विविधसमये वेदजननि !
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेदगुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिवपदवदान्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम् ।।२१।।

विधेर्मुण्डं हृत्वा यरकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदऽगमयदसाप्ररणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब गिरिशः
शिवस्थायाः शक्तेस्तदिदमखितं ते विलसितम् ।।२२।।

विरिञ्च्याख्या मातः ! सृजसि हरिसंज्ञा त्वमवसि
त्रिलोकीं रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वरदशाम्
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघदलिनि
त्वमेवैकाऽनेका भवसि कृतभेदैर्गिरिसुते ! ।।२३।।

मुनीनां चेतोभिः प्रमृदितकषायैरपि मना-
गऽशक्ये संस्प्रष्टुं चकितचकितैरम्ब ! सततम् ।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृतिकठिनाः कोमलतरे
कथं ते विन्दन्ते पदकिसलये पार्वति ! पदम् ॥२४॥

तडिद्वल्लीं नित्याममृत सरितं पाररहितां
मलोत्तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृतिमगुणग्रन्थिगहनाम् ।
गिरां दूरां विद्यामऽविनतकुचां विश्वजननी-
मपर्यन्तां लक्ष्मीमभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

शरीरं क्षित्यम्भः प्रभृतिरचितं केवलमिदं
सुखं दुःखं चायं कलयति पुमांश्चेतन इति ।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीराहंकारं तव समयुबाह्यो गिरिसुते ! ॥२६॥

पिता माता भ्राता सुहृदऽनुचरः सद्म गृहिणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति ।
तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने मातर्भव करूणया सन्निधिकरी ॥२७॥

सुता दक्षस्यादौ किल सकलमातस्त्वमुदभूः
सदोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भोरपृथगपि शक्तिर्भगवती
विवाहाज्जायासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः ॥२८॥

कणास्त्वद्दीप्तनां रविशशिकृशानुप्रभृतयः
परं ब्रह्म क्षुद्रं तव नियतमाऽनन्दकणिका ।

शिवादिक्षित्यन्तं त्रिवलयतनोः सर्वमूदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२९॥

त्वया यो जानीते रचयति भवत्यैव सततं
त्वयैवेच्छत्यम्ब ! त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
गतः साम्यं शम्भुर्वहति परमं व्योम भवती
तथात्येवं हित्वा विहरति शिवस्येति किमिदम् ॥३०॥

पुरः पश्चादन्तर्बहिरपरिमेयं परिमितं
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमगुहम् ।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवतीं
सदा पश्यन्त्याज्ञां वहसि भुवनक्षोभ जननीम् ॥३१॥

मयूरवाः पूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्तिकणिकाः
पयोधौ कल्लोलप्रतिहतमहिम्नीव पृषतः ।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजैस्तात्त्विककुलै-
यजन्ततत्वोधाः प्रशममनुकल्प परवशाः ॥३२॥

विधुर्विष्णुर्ब्रह्माप्रकृतिरणुरात्मादिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्रः सुगतमुनिराकाशमनिलः।
शिवः शक्तिश्चेति श्रुतिविषयतां तामुपगतां
विकल्पैरेभिस्त्वामऽभिदधति सन्तो भगवतीम् ॥३३॥

प्रविश्य स्वं मार्गं सहजदयया दैशिकदृशा
षडध्वध्वान्तौघच्छिदुरगणनातीतकरुणाम् ।
परानन्दाकारां सपदि शिवयन्तीमपि तनुं
स्वमात्मानं धन्याश्चिरमुपलभन्ते भगवतीम ॥३४॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्व त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिगुणगणः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथकतत्त्वं त्वत्तो भगवति न वीक्षामह इमे ।।३५।।

असंख्यैः प्राचीनैर्जजननि जननैःकर्मविलया-
दग्ते जन्मयन्तं गुरुवपुषमासाद्य गिरिशम् ।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदित्वा-
नन्येयं त्वत्पूजास्तुतिविरचनेनैव दिवसान् ।।३६।।

यत्षट्पत्रं कमलमुदितं चस्य या कर्णिकाख्या
योनिस्तस्याः प्रथितमुदरे यत्तदोङ्कारपीठम् ।
तस्मिन्नऽन्तः कुचभरनतां कुण्डलीतः प्रवृत्तां
श्यामकारां सकलजननीं सन्ततं भावयामि ।।३७।।

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम् ।।३८।।

।। समाप्ता चेयं पञ्चस्तवी ।।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
1.	3	अभिप्रेतार्थ	अभिप्रीत्यार्थ
1.	16	मोदक पूर्णपात्रपरशू	मोदक पूर्णपुरुषो
1.	18	एष	एव
2	16	सङग्रामे	सडग्रामे
3.	7	तदहं	तदहे
5.	1	दाक्षिणात्येषु	दाक्षिणत्येच
6.	6	भक्तरक्ष	भरक्तक्ष
6.	12	देन वह्नि	देववह्नि
7.	5	सोम सूर्य वह्णिमेयमान	सोमसूर्यवन्हमेयमान
7.	10	विश्वहर्तृ वन्दित	विश्हतृ वन्दित
8.	3	भक्त वृद्धि दायक	भक्त वृद्धि दायके
8.	5	पांच रात्रर्तीकत	रात्रतेकित
8.	9	वृद्वबुद्धि चिन्तित	मुद्व बुद्धि चिन्तित
8.	15	ते गणेश	स्वते गणेण
9.	2	युजु	यजो
9.	15	मालाधरा	मालाधरा
11.	12	कौलेश्वरी	कौशेश्वरी
12.	4	निधिभिस्त्वनन्त	निधिभिस्त्वन्नत
12.	9	सन्निभा	सन्निसा
12.	10	विपुलस्तुङस्तनोदभासिनी	विपुलस्तुक्षस्तोदभा-सिनी
12.	11	कटाक्षविभवैर	कटाक्षभवैर
13.	2	भुजङ्ग वलयमण्डिते	भुजङ्गवलमण्ढेत
13.	3	चषक कलश शरा	चशक कश, शर

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
13.	9	चिन्तामणि स्वरूपे	चिन्तामणिस्वरूपी
14.	14	शूलक तर्जनीं	शूलक वर्जिनीं
14.	16	नवदूर्वा सद्रशी	नवदूर्वा सघषी
15.	2	मधुरमधुपिबन्ती	मधुरमयुर्बापिन्ती
15.	8	विभूषिताम	विभूपिताम
15.	18	प्रष्टुं त्वां	प्रष्टुं
16.	6	मूढचेतना	मूढचेत
16.	17	तस्यामेव	तदारम्य
17.	4	तदारभ्य	तदारम्य
18.	4	युक्तैर्नातः	युक्तैनातः
18	7	क्लीं	कीं
19.	12	नागेन्द्रहार वलयाङ्कित	नागेन्द्रहार वलयाङ्कत
20.	4	नारद सेविता	नारदमेविता
20.	3	प्रीतिप्रिया	प्रीतिप्रथा
20.	18	सिंहवाहना	सिंहवाहिनो
20.	19	कोपना कृतिः	कोपनाकृतः
21.	15	विपञ्ची पञ्चमप्रिया	विपश्वी दख्म प्रिया
22.	9	स्पर्शवती	स्पाशवती
23.	19	कर्पूरा मोदनी	कापूरामोदिनीः
23.	19	पदमिनी	Omitted
23.	5	विजया	विजमा
23.	16	शिवदूतो	शिवादूतो
24.	4	वल्लीतन्तु	वह्लितन्तु

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
24.	5	तपसः सिद्धिदायिनी	तापसी च तपः पिया
24.	6	तापसी च तपः प्रिया	तपसः सिद्धिदायिनी
24.	7	सप्तधातुमयी मूर्ति	सप्त घातुम ा मूर्ति
24.	8	अन्न पुष्टि	अतपुष्टि
25.	4	नृपवश्यकरी प्रिया	नृपवश्यकारी क्रिया
26.	12	गुर्वी	गुर्बी
26.	17	अनादिनिधना	अनादितिदना
27.	9	मोक्षदा ध्युति	मोक्षदा ध्युति
31.	15	दीर्घकेशी	दोकेशी
32.	2	सालिग्राम शिलाशुचि	सालिग्रामशिलशुसि
32.	6	तालुस्था	तालुस्या
32.	17	खडगधारा	खड्गधारा
33.	5	सहस्रनोमदंमबाया	सहस्रनोमदम बाया
33.	8	एकभावंमुदानित्यं	एकवारंमुदानित्यं
33.	18	द्विभजां	द्विभजा
34.	6	भद्रकाली	मद्रकाली
34.	10	भद्रजा नंदा रोगहत्री	भद्रजा नंदा रोगहत्री
34.	12	रोगहर्त्री	रोगहंत्री
34.	15	मानस्तोकापराजिता	मानस्तोसपराजिता
35.	5	क्षण चण्डमुण्ड मथिनी	क्षण चण्डमुमथिनी
35.	8	जप्तं	जत्यं
36.	2	भूतादिमन्त्रैविनियोग हेतवे	भूतादिमग्त्रैविनियोग
35.	3	सम्भूत सरोज	सम्भूतमरोज
37.	3	दुर्गे स्मृता	दर्गे स ता

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
37.	16	सर्वेशे	सवर्शे
41.	1	चाखिलेपुया	चाखिलेपया
41.	10	रस्माभिरीशा	रणोभिरीषा
41.	11	तत्क्षणमेव	तत्क्षणभेव
41.	18	क्लेश विनाशं	केवशविनाशं
43.	14	विधेरज्ञानेन	विघेरज्ञानेन
43.	17	क्वचिदपि	कचिदपि
44.	8	पञ्चाशीतेरी	पञ्चाशेतर
44.	19	मोक्षस्याकांक्षा	मोक्षस्याक्षा
45	1	जननि जननं	जननि ननं
45.	4	रुक्षचिन्तन परैर्न	रुक्षचिन्तनपे
45.	13	न हि माता	न हे माता
45.	19	महिम्नः पारं ते	महिम्नः पारन्ते
46.	11	तवैश्वर्यं	तवैश्चवर्य्यं
46.	18	मोहाय जगतः	मोहाय जगताम
46.	21	परिकरं	परिकरो
47.	12	स्तुवञ्जिहेमित्वां	स्तुञ्जजहेमित्वां
48.	17	यात्यनिभृत जटा ताडित तटा	यात्योभृतजताडित तटा
48.	18	नटसि ननु	नटस ननु
49.	6	नेत्रकमलत	नेत्रकलम
49.	10	कव कर्म	क कर्म
50.	8	स्रगपि	स्मगपि
50.	12	प्रमद सलिलोत्स- संचितदृषः	प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशा

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
50.	13	यदालोक्याह्लादं	यदालोवयाहादं
51.	19	भवति भूत पतिमहेशः	भवतिमहीशः
51.	21	सदाशिवः	सदाशिः
52.	9	बिश्व ते	विशगते
52.	17	इत्थमुपोढ	इत्थुमुपोद
53.	8	परामृत वृष्टिर	पराङभृत वृष्टिर
54.	13	चतुराश्रम विषये	चत्रुराश्रम विषय
55.	1	महेश्वराय	गहेश्वराय
55.	9	वृषध्वजाय	दयुषध्वजाय
56.	2	तत्प्रणमामि	तत्प्रणामि
56.	3/4	रावणदर्प विनाशित	रावणदर्प विनाश
56.	17	पठेच्छिव सन्निधौ	पठेच्छिव सत्रिधौ
57.	6	गणेशाधिपांल	गणशाधिवालं
62.	4	"श्री भैरवः चोथी रेखा के पश्चात	
62.	17	परस्याप्याऽत्मनोऽपि वा	परस्याप्याऽत्यनोपि वा
63.	4	राजराजेश्वरीश्चरी	रारराजेश्वरि श्वरि
63.	13	ध्वजमुदगरौ	ध्वजमुदगरा
63.	14	दक्षेस्यज्ङ्कुश	दक्षेस्यज्ङ्कश
63.	19	नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः	नमस्ते रुद्ररूपेरथा
64.	6	नमः शान्तोग्रघोरादि	नमः शान्ताग्रघोरादिम
64.	7	भस्मा श्वलेष	भश्माशलष

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
64.	10	द्वयनिर्दल	द्वयनिदल
64.	19	सर्ववाङ्गमय मूतर्यें	सर्ववाङमूतर्यें
65.	6	नमः शलसुताभर्त्रे	नमः शलसुता भर्त्रे
65.	12	महा हंसाय	महाँ हसाय
65.	16	सर्व भक्षाय	सर्वाभक्षाय
66.	3	रवत्कुण्डलिनी	रवत्कुण्डलि
66	9	भोगिनी स्यन्दना रूडि प्रौढिमालब्ध गौविणे	भोगिनी स्यन्दना खो प्रौढिमालब्ध र्गीणे
66.	20	नम रमस्त्रिश	नमस्त्रदश
67.	11	शुचिवेजिते	शुचवेजिते
67.	17	सर्वथा क्वचित	सर्वथा कञ्चित
68.	16/17	ॐ नम० निर्विवाद निष्प्रमाण सिद्वये	Missing
69.	12	तदगुणत्रय	तगदुणत्रय
69.	20	ॐ० द्रक्त्रया	ॐ० द्वथन्तयो
70.	9	ॐ० संवतः	ॐ० सर्वतो
70.	15	सुश्रिये	सश्रिये
74.	11	दुष्टस्य	दयष्टस्य
80.	6	र्तीथैश्च	तीथैश्च
80.	9	नमाम्यघहरीं	नमाम्यपघहरीं
80.	11	प्रहृष्ट	प्रहरष्ट
81.	4	त्रिनयनां	त्रिनयंना
81.	11	ध्युतिम	हृयतम

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
81.	16	या दृष्टया	या दृषया
82.	1	मूर्तिरेका	मोतिरेका
82.	4	भर्गवपषी	भर्मवपुषी
82.	5	कृशानुनेत्रां	कृशानेनेत्रां
82.	9	तलऽमर मूर्ध मौलि	तलेऽमर घूर्धा मौलि
82.	11	किंजल्कपानरत	किंजल्कपानरल
82.	12	नोऽव्यात	
83.	2	विशेष सौख्य जननीं	विशेष सौश्य जननीं
83.	5	कोंटि प्रभां सुप्रभां	कोट प्रभां सुप्रभां
83.	10	ज्वालमुखी	ज्वालमुखी
83.	12	परिधान्छूलं	परिध्यान्छूलं
83.	13	करैस्त्रिनयनां	करस्त्रिनयनां
83.	14	यामस्तौत्स्वपिते हरौ	यामस्तौत्स्वपितो हरौ
84.	15	पंचभिरथो	पचंभिरषि
84.	16	शमभोर्नवभिरिति	शम्योर्नवभिरिष
84.	18	भुवनकोणाः	शरनकोणाः
85.	16	पूरयन्ती पिशाचाम	पूरयन्तो पिशाचाम
85.	17	खह खह खह कृत	ख ख ख कृत
86.	11	कामेश्वरि	कामेश्वरी
86.	13	गृहाणस्मत्कृतं	गृहाणस्मकृतं
86.	18	पापघनी	To be added
87.	10	धातारमचिन्त्यरूपमादित्य	धातारमचिन्त्यरूपमादिव्य

पृष्ठ	रेखा	शुद्ध	अशुद्ध
		पचस्तवी	
2.	21	आर्भटया	ओभटक्या
6.	20	सोमन्तसीमन	सीमन्तसोन्म
11.	7	त्रिरह ग्रस्ता	विरग्रस्ता
12.	5	भवतीं	भगवतीं
14.	7	कंचन	Missing
14.	9	शवलक्षणं	क्षलक्षणं
14.	23	विध्येति यां श्रुति	विध्येतियां श्रुति
17.	3	ये भावन्त्य	भावयन्त्य
18.	4	ननु नर्तकीव	ननुकीव
18.	5	आनन्द लक्षणनमना-हतनामन	आनब्दलक्षणमनाहनागिन
19.	6	निजयैव वृष्टया	निजपैव वृष्टया
19	21	याने निवेश्य	याने विवेश्य
21	4	मुगधाय महसे	मुगघाय पहसे
21	12	निरालम्बं चेतः परि-लुठति	निखेलम्ब्र चेतः परिलठति
22.	16	स्वपदकमलप्रहव शिरसाम	प्रहलशिरसाम
23.	5	मन्त्रौर्मिपटलै	मन्त्रौपिटलै
24.	15	यदकुरूत	यरकुरूत
24.	18	तद इदं अखिलं ते	तद दिम खिटन ते
26.	14	भजन्ते तत्वौघा	यजन्तित्वोघा
27.	9	तस्य या कोंणकाख्या	चस्य या कोंणकाख्या।

प्रकाशक :

जवाहर लाल हाक, क्रालयार रैनावारी श्रीनगर (काश्मीर)
29, तोफ शेरखानियां, जम्मू-181121

सम्पादक :

जवाहर लाल पीर, भट्ट: यार, श्रीनगर (काश्मीर)
766, सुभाष नगर, जम्मू-180005

मिलने का पता :

जवाहर लाल हाक
29, तोफ शेरखानियां, जम्मू-181121
दूरभाष : 544687

हाक इनवेस्टमैण्ट कनसलटेनसी
29, तोफ शेरखानियां, जम्मू-181121

दिल्ली का पता :

मोती लाल मैगज़ीन
जे-3, काश्मीरी अपारटमैन्ट
पीतामपुरा, नई दिल्ली—110001

मूल्य : [redacted] 30/-